जुलाई, 2024 , वर्ष : 45 अंक : 07

www.indiatibet.net

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

तिब्बत देश

अधिनियम क्या कहता है?

मूल्य :10 रू , वार्षिक : 100 रू

जुलाई , 2024 , वर्ष : 45 अंक : 07

तिब्बत देश

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथो में

सिक्योंग ने 'रिज़ॉल्व तिब्बत ऐक्ट' को पारित कर कानून बनाने में शामिल सभी लोगों के प्रति तिब्बतियों की ओर से हार्दिक आभार व्यक्त किया

प्रधान संपादक
ताशी देकि

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
मिग्मार छमचो

वितरण प्रबंधक
नावांग छोडेंन

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचरों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

समाचार -

- परम पावन दलाई लामा ने अपने ८९वें जन्मदिन पर संदेश दिया 1
- परम पावनदलाई लामा ने नए ब्रिटिश प्रधानमंत्री को बधाई दी 2
- सिक्योंग ने 'रिज़ॉल्व तिब्बत ऐक्ट' को पारित कर कानून बनाने में शामिल सभी लोगों के प्रति तिब्बतियों की ओर से हार्दिक आभार व्यक्त किया 3
- अधिनियम क्या कहता है? 4
- सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने ब्रिटेन के नए प्रधानमंत्री सर कीर स्टारमर को चुनावी जीत पर बधाई दी 5
- सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने वाशिंगटन डीसी में अमेरिकी सांसदों से मिल आभार प्रकट किया 6
- स्पीकर खेंपो सोनम तेनफेल ने 'जैपनिज पार्लियामेंटेरियन सपोर्ट ग्रुप फॉर तिब्बत' से मुलाकात की 7
- कालोन थरलम डोल्मा चांगरा ने जापानी विश्वविद्यालयों के छात्रों को संबोधित किया 8
- शिक्षा मंत्री थरलम डोल्मा चांगरा ने सीबीएसई सचिव से मुलाकात की 9
- धर्मशाला में परम पावन दलाई लामा के ८९वें जन्मदिन का स्मरण 10
- प्रतिनिधि डॉ. शांवांग ग्यालपो आर्य ने टोक्यो में अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता शिखर सम्मेलन में तिब्बत में धर्म पर चीनी अत्याचारों का मुद्दा उठाया 11

समाचार -

- कैनबरा स्थित तिब्बत कार्यालय और चीनी लोकतंत्र गठबंधन ने 'शी जिनपिंग के बाद चीन-तिब्बत संबंध' विषय पर संगोष्ठी आयोजित की 12
- चीन सरकार ने एक और विख्यात तिब्बती निजी स्कूल को निराधार आरोप लगाकर बंद कर दिया 13
- अरुणाचल प्रदेश के तिब्बत समर्थक समूह के अध्यक्ष और सदस्यों ने तेनजिंगांग तिब्बती सेटलमेंट कार्यालय का दौरा किया 14
- तिब्बत ने पेरिस ओलंपिक खेलों के उद्घाटन समारोह में भाग लिया 15

मुद्रक एवं प्रकाशक
जमयांग दोरजी द्वारा
नोरबू ग्राफ़िक्स , 1/6, बेसमेंट
विक्रम विहार , लाजपत नगर
नई दिल्ली - 110024

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत - तिब्बत समन्वय केन्द्र की वेबसाइट

coordinator@indiatibet.net

अपनी बात ◆ सेवा-त्याग-प्रेम के प्रतीक दलाईलामा को जन्मदिन की हार्दिक बधाई

अपने जीवन के 89 वर्ष पूरे कर चुके परमपावन दलाईलामा का जन्मदिन गत 6 जुलाई, 2024 को विष्व के अधिकांष देषों में उत्साहपूर्वक मनाया गया। सभी तिब्बतियों एवं तिब्बत समर्थकों के लिये दलाईलामा की जन्मतिथि एक पर्व और उत्सव है। इस अवसर पर प्रतिवर्ष उनके आध्यात्मिक अनुयायी एवं अन्य समर्थक अनेकानेक कार्यक्रम आयोजित करते हैं। ये आयोजन उनकी चार प्रमुख प्रतिबद्धताओं के अनुरूप होते हैं।

दलाईलामा के आचार-विचार-व्यवहार में हर समय उनकी प्रतिबद्धताओं की झलक मिलती है। उन्होंने अपने सार्वभौमिक दायित्व में मानवीय मूल्यों को प्रधानता दी है। शांति, अहिंसा, करुणा, मैत्री तथा सहयोग उच्च कोटि के मानवीय मूल्य हैं। ये प्रत्येक व्यक्ति के लिये आवष्यक हैं। संसार के प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में इनकी हर समय आवष्यकता है। इनकी मदद से कई प्रकार की सामाजिक तथा राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय विवादों का हल संभव है। सिर्फ इनकी उपेक्षा ने विष्व में अषांति और अत्याचार को बढ़ाने का काम किया है। मानवीय मूल्यों को दलाईलामा सर्वोपरि मानते हैं। उनकी इसी प्रतिबद्धता के प्रति समर्थन देने के लिये उन्हें कई राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय सम्मान-पुरस्कार मिलते रहते हैं। इनमें नोबेल शांति पुरस्कार भी सम्मिलित है।

अपने अध्ययन और अनुभव से दलाईलामा ने सर्वपंथसमादरभाव (सेकुलरिज्म) को आवष्यक माना है। संसार में कई मजहब (रिलिजन, पंथ, मत, संप्रदाय) हैं। इनके बीच बहुत संघर्ष की स्थिति है। इनके बीच सहयोग, समन्वय एवं सामंजस्य से परिस्थिति बदलेगी। कोई भी मजहब अन्य मजहब से अपने को अच्छा प्रमाणित करने में समय मत बर्बाद करे। प्रत्येक मजहब का अनुयायी अपने मजहब के अनुसार पूजा-पाठ करे तथा पर्वत्योहार मनाये। साथ ही वह अन्य मतों में प्रचलित उपासना-पद्धति, परंपरा और उत्सव आदि को भरपूर सम्मान दे। इससे सभी संप्रदायों में परस्पर सामंजस्य एवं सद्भाव का वातावरण मजबूत होगा। यही है सर्वपंथसमादरभाव अर्थात् सेकुलरिज्म या पंथनिरपेक्षता।

दलाईलामा स्वयं बौद्ध हैं फिर भी वे अपने रिलिजन के कार्यक्रमों में अन्य रिलिजन के अनुयायियों को सादर आमंत्रित करते हैं। इसी प्रकार अन्य मतावलंबी भी अपने कार्यक्रमों में दलाईलामा को ससम्मान आमंत्रित करते हैं तथा उनके प्रवचन-उपदेष सुनते हैं। यही पंथनिरपेक्षता दलाईलामा की दूसरी प्रतिबद्धता है।

दलाईलामा की तीसरी प्रतिबद्धता तिब्बत से जुड़ी है। तिब्बती होने के कारण वे तिब्बत की कला, संस्कृति, इतिहास तथा बौद्ध दर्षन को समृद्ध करने में लगे हैं। स्वतंत्र तिब्बत देष पर साम्राज्यवादी-साम्यवादी चीन के अवैध आधिपत्य के बाद दलाईलामा ने सन् 1959 में

अपनी गुरुभूमि भारत में शरण ली। ध्यातव्य है कि बौद्धदर्षन भारत से ही तिब्बत गया था। हिमाचल प्रदेष के कांगड़ा जिलांतर्गत धर्मषाला से निर्वासित तिब्बत सरकार संचालित है। यह तिब्बती समाज द्वारा लोकतांत्रिक तरीके से मतदान द्वारा निर्वाचित सरकार है। दलाईलामा अपने समस्त राजनीतिक अधिकार इसी लोकतांत्रिक सरकार को सौंप चुके हैं। इसके बावजूद निर्वासित तिब्बत सरकार उनके ही मार्गदर्षन में शांतिपूर्ण कार्य कर रही है। उनकी प्रेरणा से ही तिब्बत आंदोलन पूर्णतः अहिंसक एवं शांतिपूर्ण है। विष्व समुदाय की स्पष्ट मांग है कि चीन सरकार फिर से दलाईलामा तथा निर्वासित तिब्बत सरकार के प्रतिनिधिमंडल के साथ सार्थक वार्ता प्रारम्भ करे। उपयुक्त वातावरण बनाने के लिये वह तिब्बत में मानवाधिकारों का संरक्षण करे तथा तिब्बती पहचान मिटाने का षड्यंत्र बंद करे। तिब्बती पहचान के संरक्षण हेतु तिब्बत की कला-संस्कृति-इतिहास एवं बौद्ध दर्षन को विनाष से बचाना होगा।

दलाईलामा की चैथी प्रतिबद्धता का संबंध भारत की प्राचीन नालंदा परंपरा से है। दलाईलामा भारत को अपना दूसरा घर कहते हैं। उनके अनुसार प्राचीन नालंदा परंपरा ने भारत को "विष्वगुरु" बनाया था। नालंदा विष्वविद्यालय में विष्व के प्रत्येक कोने से विद्वान एवं विद्यार्थी आते थे। सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में यहाँ अध्ययन-अध्यापन एवं अनुसंधान होता था। ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार कुख्यात बख्तियार खिलजी ने यहाँ की लाइब्रेरी में आग लगवा दी थी और विद्वानों, बौद्ध भिक्षुओं तथा विद्यार्थियों की हत्या करवाई थी। इससे नालंदा विष्वविद्यालय को अपूरणीय क्षति पहुँची थी। दलाईलामा की प्रेरणा एवं आषीर्वाद से भारत सरकार ने पुनः नालंदा विष्वविद्यालय की स्थापना की है। भारत स्थित सभी तिब्बती षिक्षण संस्थान आज भी प्राचीन नालंदा विष्वविद्यालय के ज्ञान-भंडार को समृद्ध कर रहे हैं।

दलाईलामा के जन्मदिवस पर उनकी चार प्रतिबद्धताओं के पुनः स्मरण से नई ऊर्जा एवं रचनात्मक शक्ति मिलती है। वृंदावन के प्रसिद्ध पूज्य संत स्वामी शरणानंद जी ने सेवा-त्याग-प्रेम से भरपूर मानव जीवन को सार्थक बताया है। इस दृष्टि से दलाईलामा का जीवन सचमुच सार्थक है। उनमें परहित तथा यथाषक्ति सहयोग का भाव है, जो "सेवा" की अनिवार्य शर्त है। वे अपने राजनीतिक अधिकार स्वयं छोड़ चुके, जो "त्याग" का प्रतीक है। वे सभी मनुष्यों के प्रति आत्मीयता-करुणा से भरपूर हैं। यही "प्रेम" की पहचान है।

दलाईलामा वास्तव में अंतरराष्ट्रीय व्यक्तित्व हैं। वे विभिन्न देषों में वहाँ की जनप्रतिनिधि संस्थानों को संबोधित कर चुके हैं। उनके अथक प्रयास का परिणाम है कि तिब्बत का प्रष्न एक अंतरराष्ट्रीय प्रष्न बन चुका है। तिब्बत में जारी दमनकारी चीनी नीति का चैतरफा विरोध हो रहा है। तिब्बत संबंधी चीनी दुष्प्रचार प्रभावहीन हुआ है तथा चीन सरकार की अलोकतांत्रिक धमकियों की उपेक्षा कर विभिन्न देष तिब्बत आंदोलन के पक्ष में दृढ़ता से सक्रिय हैं। ऐसे में जरूरी है कि चीन सरकार तिब्बत समस्या का सार्थक समाधान निकाले। दलाईलामा इसी विचार को आगे बढ़ा रहे हैं। "तिब्बत देष" पत्रिका की ओर से दलाईलामा के दीर्घ जीवन हेतु प्रार्थना एवं जन्मदिन की बधाई।

प्रो0 श्यामनाथ मिश्र
पत्रकार एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खेतड़ी (राजस्थान)

मो.-9079352370, 8764060406
E-mail & Facebook: - shyamnathji@gmail.com

◆ 1.परम पावन दलाई लामा ने अपने ८९वें जन्मदिन पर संदेश दिया

०७ जुलाई, २०२४

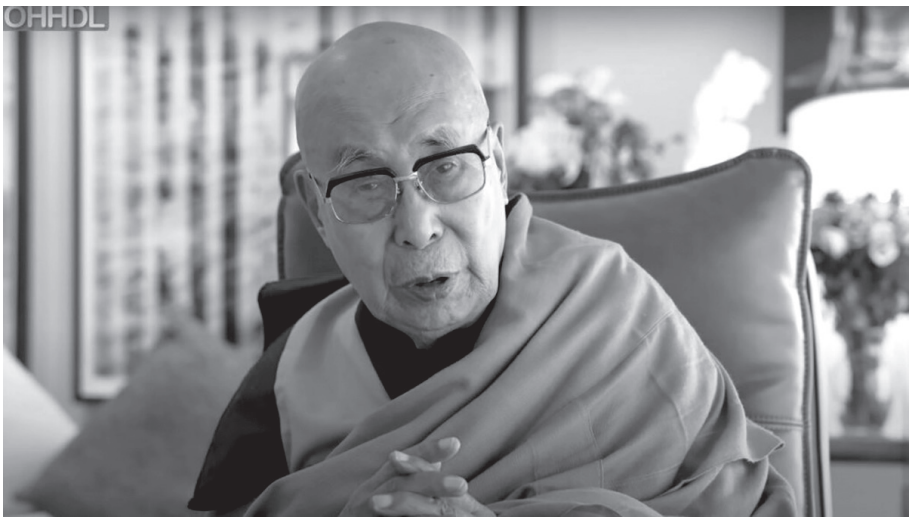

न्यूयॉर्क (अमेरिका)। परम पावन दलाई लामा ने अपने ८९वें जन्मदिन के अवसर पर अनुयायियों को ऑनलाइन माध्यम से संबोधित किया और दुनिया के कोने-कोने से आए जन्मदिन की शुभकामनाओं के लिए सभी को धन्यवाद दिया।

उन्होंने कहा, 'आज तिब्बत के अंदर और बाहर रहनेवाले तिब्बती लोग बहुत खुशी और उत्साह के साथ मेरा जन्मदिन मना रहे हैं। हिमालयी क्षेत्रों के भी सभी तिब्बती और अन्य लोग मेरे लिए प्रार्थना कर रहे हैं।' इसके लिए मैं आप सभी का धन्यवाद करना चाहता हूँ।'

उन्होंने आगे कहा, 'मैं अब लगभग ९० वर्ष का हो गया हूं। हालांकि पैरों में थोड़ी तकलीफ़ को छोड़कर मैं अस्वस्थ महसूस नहीं करता हूं। मैं पूरी तरह से स्वस्थ हूं। मैं अपने जन्मदिन पर तिब्बत के अंदर और बाहर के सभी शुभचिंतक तिब्बतियों को मेरे लिए प्रार्थना करने के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं। मेरा जन्म धोमय (अमदो) की धरती पर हुआ था और अब मैं दलाई लामा की उपाधि से विभूषित हूं। जब मैं तिब्बत में था तब भी और निर्वासन में आने के बाद भी मैंने अपने जीवन का पूरी तरह से सार्थक उपयोग किया है। मैंने अपनी पूरी क्षमता से सेवा की है। इसलिए मुझे ऐसा लगता है कि मुझे इसका काफी हद तक लाभ मिला है। दुनिया भर में तिब्बती मुद्दे में रुचि बढ़ रही है और मुझे लगता है कि मैंने इसमें एक छोटा सा योगदान दिया है। मैं सभी से, विशेष रूप से तिब्बत के अंदर निवास कर रहे तिब्बतियों से सहज महसूस करने और आराम करने के लिए कहना चाहता हूं। मुझे थोड़ी शारीरिक परेशानी महसूस होती है, लेकिन यह तो उम्र बढ़ने के कारण होना ही है, है न।

हालांकि कुल मिलाकर मैं बहुत अच्छा जीवन जी रहा हूं। इसलिए, कृपया आराम करें और सुकून से रहें। आज मैं आपको कुछ विशेष बात बताना चाहता हूं। हाल ही में मेरे घुटने का ऑपरेशन हुआ है, जिससे मुझे कुछ समस्याएं रही हैं। हालांकि, मैं स्वस्थ हो रहा हूं और अब मुझे कोई समस्या नहीं है। इसलिए, कृपया खुश रहें और आराम करें। हो सकता है कि कुछ लोग आपको मेरे स्वास्थ्य के बारे में भ्रमित करने की कोशिश कर रहे हों। ऐसे लोग यह कह सकते हैं कि दलाई लामा अस्पताल में भर्ती हैं और उनका इलाज चल रहा है। इस तरह की बातें करके वे मेरी स्थिति को गंभीर बनाने की कोशिश कर सकते हैं। आपको ऐसी गलत सूचनाओं पर ध्यान देने की ज़रूरत नहीं है।

जहां तक मेरा खुद का सवाल है, बेशक मुझे घुटनों में कुछ छोटी-मोटी समस्याएं थीं। अस्पताल ने मेरे घुटने पर मेडिकल टेस्ट और जांच की और मेडिकल की पूरी टीम ने अपनी सेवा में बहुत प्यार और समर्पण के साथ मेरा इलाज किया। इसलिए, मैं इस अवसर पर उन सभी को धन्यवाद देना चाहता हूं। लोगों से मैं कहना चाहता हूं कि सर्जरी के बावजूद मैं शारीरिक रूप से फिट महसूस कर रहा हूं। इसलिए, मैं आपसे खुश और तनावमुक्त रहने का अनुरोध करना चाहता हूं।

परम पावन दलाई लामा ने अपने संबोधन का समापन करते हुए कहा, 'दलाई लामा के तौर पर अब तक मैंने अपनी क्षमता के अनुरूप तिब्बत के भीतर और बाहर और दुनिया के कई हिस्सों के लोगों के लिए और सबसे महत्वपूर्ण बुद्ध के उपदेशों के बारे में कार्य किया है। मैं आगे भी अपना प्रवचन जारी रखने के लिए दृढ़ हूं। मैं पूरे दिल से ऐसा करने का संकल्प लेता हूं। मैं सभी तिब्बतियों से, वे चाहे जहां भी हैं, आग्रह करना चाहता हूं कि कृपया मेरे जन्मदिन समारोह पर मेरे लिए प्रार्थनाएं करते रहें। कृपया अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करें।'

◆ २. परम पावनदलाई लामा ने नए ब्रिटिश प्रधानमंत्री को बधाई दी

०७ जुलाई, २०२४

न्यूयॉर्क (अमेरिका)। परम पावन दलाई लामा ने ब्रिटेन में हाल में हुए चुनावों में सर कीर स्टारमर की पार्टी की जीत और उन्हे ब्रिटेन के नए प्रधानमंत्री के रूप में नियुक्त होने पर बधाई देने के लिए पत्र लिखा है।

उन्होंने लिखा, 'आज दुनिया बहुत सी चुनौतियों का सामना कर रही है। मेरा मानना है कि ब्रिटेन के पास लगातार अधिकाधिक परस्पर निर्भर होती जा रही दुनिया में शांति और स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण योगदान देने का अवसर है।'

'यूनाइटेड किंगडम (ग्रेट ब्रिटेन) की कई यात्राओं के दौरान मैंने अपने गर्मजोशी और अंतर-धार्मिक सद्भाव जैसे बुनियादी मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देने के प्रयासों में ब्रिटिश जनता की उत्साही रुचि की सराहना की है। मैं सभी क्षेत्रों के लोगों द्वारा अपने प्रति दिखाए गए स्नेह और मित्रता से भी बहुत प्रभावित हुआ हूं।'

'ऐतिहासिक रूप से तिब्बतियों का ग्रेट ब्रिटेन के साथ एक लंबा और अनूठा रिश्ता रहा है। पिछले कुछ वर्षों में कई ब्रिटिश हस्तियों ने तिब्बती लोगों की स्वतंत्रता और सम्मान की आकांक्षाओं के लिए मजबूत समर्थन दिखाया है, जिसके लिए मैं उनका आभारी हूं।'

'मैं कामना करता हूं कि आप यूनाइटेड किंगडम के लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने में पूरी तरह सफल हों।'

◆ ३. सिक्योंग ने 'रिज़ॉल्व तिब्बत ऐक्ट' को पारित कर कानून बनाने में शामिल सभी लोगों के प्रति तिब्बतियों की ओर से हार्दिक आभार व्यक्त किया

१३ जुलाई, २०२४

धर्मशाला। वर्तमान में जंगथांग (लद्दाख) में तिब्बती खानाबदोश बस्तियों के आधिकारिक दौरे पर चल रहे सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने आज १३ जुलाई की सुबह जंगथांग सुमधो से मीडिया को संबोधित किया और 'रिज़ॉल्व तिब्बत ऐक्ट' को अमेरिका के कानून में शामिल करने, आगे बढ़ाने और अनुवाद करने में शामिल सभी लोगों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।

सिक्योंग ने कहा, 'आज सुबह जब मैं लद्दाख के तिब्बती खानाबदोश बस्तियों में से एक- सुमदो में सोकर उठा, तो मुझे यहां एक अच्छी खबर मिली कि अमेरिकी राष्ट्रपति जो बिडेन ने आज सुबह 'रिज़ॉल्व तिब्बत ऐक्ट या तिब्बत समाधान विधेयक' पर हस्ताक्षर करके इसे कानून बना दिया है। आज की तारीख भारत में १३ जुलाई और संयुक्त राज्य अमेरिका में १२ जुलाई है। मैं इस अवसर पर राष्ट्रपति जो बिडेन को इस कानून पर हस्ताक्षर करने के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं और साथ ही विदेश मामलों की समिति के अध्यक्ष अमेरिकी सांसद मैककॉल और जिम मैकगवर्न को इसे सदन में पेश करने और सदन, समिति और फिर सदन में इसे पारित कराने के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं। मैं रिपब्लिकन पार्टी से सीनेटर टॉड यंग और डेमोक्रेटिक पार्टी के सीनेटर जेफ मर्कले और सीनेट की विदेश संबंध समिति के अध्यक्ष सीनेटर बेन कार्डिन को भी धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने इसे सीनेट समिति और सीनेट में सर्वसम्मति से पारित कराने में अपना पूरा सहयोग दिया।

यह तिब्बत पर अमेरिकी नीति और चीन-तिब्बत संघर्ष या विवाद को हल करने के तरीके में बदलाव है, जैसा कि कानून में उल्लेख किया गया है। यह कानून हमारे लिए इस मायने में महत्वपूर्ण है कि अमेरिका एकमात्र ऐसा देश है जिसके पास २००२ से तिब्बत पर एक कानून है जिसे 'यूएस-तिब्बत समर्थन और नीति अधिनियम २०२०' के माध्यम से संशोधित किया गया है। इस बीच, एक और कानून भी पारित किया गया था जिसे रेसिप्रोकल एक्सेस टू तिब्बत ऐक्ट (आरएटीए) कहा जाता है। यह चौथा कानून है और यह हमारे लिए राजनीतिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह अधिनियम या कानून तिब्बत को एक अनसुलझा मुद्दा बताता है और कहता है कि अगर भविष्य में चीन-तिब्बत विवाद को हल करने की आवश्यकता है तो इसे अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत हल किया जाना चाहिए। कानून तिब्बती लोगों के आत्मनिर्णय के अधिकार के बारे में भी बात करता है, जो अंतरराष्ट्रीय कानून में है। कानून चीन के प्रचार या चीन के इस दावे को स्वीकार न करने की भी बात करता है कि तिब्बत प्राचीन काल से चीन का हिस्सा रहा है, जिसे संयुक्त राज्य अमेरिका मान्यता नहीं देता है, और परम पावन ने भी मान्यता नहीं दी है।

यह विशेष प्रावधान चीन की ओर से तिब्बती इतिहास, तिब्बती लोगों, संस्थाओं और परम पावन दलाई लामा के बारे में गलत जानकारी या गलत बयानबाजी का मुकाबला करने की बात करता है। इस अधिनियम का अंतिम भाग तिब्बत के क्षेत्र के बारे में है। यह केवल तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है, जिसे चीन तिब्बत के रूप में परिभाषित कर रहा है और उन्होंने अब इसका नाम बदलकर शिज़ांग रख दिया है। इसकी जगह यह कानून कहता है कि न केवल तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र, बल्कि तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र के बाहर के क्षेत्र, जैसे कि किंघई प्रांत, सिचुआन प्रांत, और गांसु और युन्नान भी तिब्बत का हिस्सा हैं। तो यह तिब्बत पर अमेरिकी नीति में एक नया बदलाव है। मुझे लगता है कि इसे अलग-अलग पर्यवेक्षकों, चीनी पर्यवेक्षकों और तिब्बती पर्यवेक्षकों द्वारा अलग-अलग तरीकों से समझा गया है। हमारे लिए, यह एक नया उपकरण है।

अब हमें अमेरिकी सरकार के साथ-साथ कई अन्य समान विचारधारा वाले देशों के साथ मिलकर काम करना शुरू करना होगा ताकि उन्हें अमेरिकी सरकार द्वारा अपनाए गए रुख के समान रुख अपनाने के लिए राजी किया जा सके।

मैं इस तथ्य से पूरी तरह से अवगत हूं कि अमेरिकी राष्ट्रपति बिडेन द्वारा कानून पर हस्ताक्षर करने के बाद व्हाइट हाउस से आए बयान के एक हिस्से को लेकर कुछ लोग काफी चिंतित हैं, जिसमें तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र और तिब्बत के अन्य हिस्सों के चीन का हिस्सा होने के बारे में अमेरिका की घोषित स्थिति का उल्लेख है। यह कानून पर नकारात्मक प्रभाव नहीं डालता है, क्योंकि कानून मुख्य रूप से तिब्बत की स्वतंत्र देश के रूप में ऐतिहासिक स्थिति की बात करता है। इसलिए, मुझे उम्मीद है कि लोग इसे गलत नहीं समझेंगे। वे इसे सही भावना से लेंगे। यह किसी भी तरह से कानून को प्रभावित नहीं करता है। बेशक, अमेरिका-चीन संबंधों के बीच बहुत तनाव है और ऐसी चीजें हैं जिन्हें अमेरिकी सरकार को निपटारा करना है। इसलिए हमें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काम करते समय उन सभी को भी ध्यान में रखना होगा। आप सभी का धन्यवाद।

बहुत से लोगों ने बहुत प्रयास किया है। यह केवल अमेरिकी संसद के पुरुष और महिलाएं ही नहीं हैं जिन्होंने सदन और सीनेट दोनों में, डेमोक्रेट और रिपब्लिकन दोनों पक्षों के समर्थन से बिल को पारित किया है। इसमें हमारी ओर से भी अप्रैल २०२२ से सीटीए की ओर से रणनीति बनाकर बहुत प्रयास किए गए हैं। इस तरह के प्रयास पिछले २६ महीनों से चल रहा है। तिब्बत कार्यालय के साथ सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग में हमारा नेतृत्व बहुत प्रेरणादायक रहा है। इस मामले में प्रतिनिधि नामग्याल चोएडुप ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हमने इंटरनेशनल कंपेन फॉर तिब्बत (आईसीटी) के मित्रों, विशेष रूप से रिचर्ड गेरे, जो बहुत अच्छे दोस्त हैं, पुराने दोस्त हैं, ने हर बार हमारे साथ आकर कैपिटोल हिल (वाशिंगटन डीसी में अमेरिकी सरकार का मुख्यालय) में पैरवी करने में साथ निभाया है। मैंने अमेरिका का दौरा किया, मैं वहां छह बार गया। चार बार गेरे हमारे साथ रहे। एक बार वे शारीरिक रूप से हमारे साथ शामिल नहीं हो पाए, लेकिन वे ऑनलाइन हमारे साथ शामिल हुए। रिचर्ड ला, मैं इस विधेयक को आगे बढ़ाने में आपके समर्थन, मदद और मार्गदर्शन के लिए आपको धन्यवाद देना चाहता हूं। साथ ही मैं आईसीटी के अध्यक्ष तेनचो ला के अतिरिक्त आईसीटी में भुचुंग ला, फ्रांज और अन्य मित्रों के पूरे नेतृवर्ग को धन्यवाद देना चाहता हूं। इन सब महानुभावों ने लगातार पिछले २६ महीने तक इसे पारित करने के लिए बहुत-बहुत मेहनत की है। मैं तिब्बत के लिए जनमत बनानेवालों (लॉबिस्टों)द्वारा भरपूर समर्थन के लिए उन्हें धन्यवाद देता हूं। इनमें वे युवा तिब्बती भी शामिल हैं, जो कई वर्षों से वाशिंगटन जाते रहे हैं। विशेष रूप से इस वर्ष ११ और १२ मार्च को २०० से अधिक तिब्बती कैपिटोल हिल में विशेष रूप से इस बिल पर लॉबिंग कर रहे थे। इसके अतिरिक्त और बहुत से तिब्बत समर्थक हैं जिन्होंने इस बिल का समर्थन करने के लिए नेताओं को पत्र लिखा है। इस अभियान में तिब्बती समुदायों ने भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसलिए इस अनुभव से हम जानते हैं कि यदि हम अपनी सारी ऊर्जा सकारात्मक दिशा में लगाते हैं तो परिणाम प्राप्त करना संभव है। इसका सारा श्रेय हम में से हर एक को जाता है जिसने इस पर काम किया है। हम इसे एक सबक के रूप में याद रखें कि हमें भविष्य में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपने उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए कैसे मिलकर काम करना चाहिए। इसलिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। यह तिब्बत के अंदर रहनेवाले और बाहर निर्वासित में रहनेवाले तिब्बतियों के लिए बहुत मायने रखता है। आगे हमें उस गति से काम करना होगा जो हमने पहले ही तय कर ली है। तो चलिए इसे पूरा करते हैं। हमें यह काम मिलकर करना है। मैं फिर से आप सभी का शुक्रिया अदा करना चाहता हूं।

सिक्योंग ने आगे कहा, हर कोई जानता है कि यह सब परम पावन दलाई लामा के आशीर्वाद से हो रहा है। मैं परम पावन को उनके शीघ्र स्वस्थ होने के लिए भी धन्यवाद देना चाहता हूं। मैं आपको बताना चाहता हूं कि कल से परम पावन बिना किसी सहारे के अपने बल पर चलने लगे हैं। परम पावन बहुत अच्छी तरह से ठीक हो रहे हैं। मैं उन हर तिब्बती और गैर-तिब्बतियों को धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने परम पावन के स्वस्थ होने के लिए प्रार्थना की है। परम पावन के शीघ्र स्वस्थ होने के लिए हमें उनके शीघ्र स्वस्थ होने के लिए प्रार्थना करते रहना चाहिए। इससे तिब्बती आंदोलन की दीर्घकालिक स्थिरता में काफी मदद मिलेगी। आप सबका एक बार फिर से बहुत-बहुत धन्यवाद।

◆ ४ अधिनियम क्या कहता है?

१) तिब्बती नीति अधिनियम- २००२

तिब्बती नीति अधिनियम क्या है?

- यह तिब्बती लोगों के प्रति अमेरिकी संसद (कांग्रेस) के समर्थन की व्यापक और व्यावहारिक अभिव्यक्ति है। इसका घोषित उद्देश्य तिब्बती लोगों की अपनी विशिष्ट पहचान की रक्षा करने की आकांक्षाओं का समर्थन करना है।

- तिब्बती नीति अधिनियम अमेरिका- चीन नीति के अनुकूल ढांचे में फिट बैठता है और चीन के साथ जुड़ाव को प्रोत्साहित करता है।

बिल क्या कहता है:-

- अमेरिकी कांग्रेस की इस भावना को व्यक्त करता है कि राष्ट्रपति और विदेश मंत्री को पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना की सरकार को दलाई लामा या उनके प्रतिनिधियों के साथ तिब्बत को लेकर समझौते की ओर ले जाने वाली बातचीत में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए कदम उठाने चाहिए। यह राष्ट्रपति और विदेश मंत्री को उठाए गए किसी भी कदम की स्थिति रिपोर्ट कांग्रेस को भेजने का निर्देश भी देता है।

- विदेश विभाग के भीतर तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिका की ओर से विशेष समन्वयक नियुक्त करने का अधिका देता है जो चीन की सरकार और दलाई लामा या उनके प्रतिनिधियों के बीच ठोस संवाद को बढ़ावा देगा।

- अमेरिका के निर्यात-आयात बैंक, विदेशी-निजी निवेश निगम और व्यापार एवं विकास एजेंसी सहित प्रत्येक अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के अमेरिकी कार्यकारी निदेशकों को तिब्बत में निर्वासित तिब्बती सरकार द्वारा स्थापित दिशा-निर्देशों की दिशा में निर्दिष्ट सिद्धांतों के अनुरूप परियोजनाओं का समर्थन करने का निर्देश देता है।

निम्नलिखित के संबंध में प्रावधान किया गया है:

- कैदियों की रिहाई और जेलों की निगरानी : अमेरिकी राष्ट्रपति और विदेश मंत्री को पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना की सरकार के प्रतिनिधियों के साथ बैठक में-

- तिब्बत में अपने राजनीतिक- धार्मिक विचार व्यक्त करने के आरोप में बंदी बनाए गए सभी लोगों की तत्काल और बिना शर्त रिहाई का अनुरोध करना चाहिए।

- तिब्बत में कैदियों से अंतरराष्ट्रीय मानवीय संगठनों मिलने की व्यवस्था सुनिश्चित करें। उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कैदियों के साथ दुर्व्यवहार नहीं किया जा रहा है और उन्हें आवश्यक चिकित्सा देखभाल मिल रही है।
- गंभीर रूप से बीमार तिब्बती कैदियों के लिए तत्काल चिकित्सा पैरोल की मांग करें।
तिब्बत की राजधानी ल्हासा में अमेरिकी शाखा कार्यालय की स्थापना: विदेश मंत्री को तिब्बत में राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास की निगरानी के लिए तिब्बत की राजधानी ल्हासा में एक कार्यालय स्थापित करने का सर्वोत्तम प्रयास करना चाहिए।

- तिब्बती भाषा प्रशिक्षण की आवश्यकता : अमेरिकी विदेश मंत्री यह सुनिश्चित करेंगे कि विदेश सेवा अधिकारियों को तिब्बती भाषा का प्रशिक्षण मिले। साथ ही यह सुनिश्चित करने के लिए हरसंभव प्रयास किया जाए कि तिब्बती भाषी विदेश सेवा अधिकारी को चीन में अमेरिका की ओर से नियुक्त किया जाए, जो तिब्बत में चल रही गतिविधियों की निगरानी के लिए जिम्मेदार हो।

तिब्बत में आर्थिक विकास

नीति की घोषणाएं - तिब्बत के अंदर रह रहे तिब्बतियों के लिए आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण, स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा और पर्यावरणीय स्थिरता का समर्थन करना संयुक्त राज्य अमेरिका की नीति है। इस नीति के समर्थन में संयुक्त राज्य अमेरिका उपधारा (घ) में निहित सिद्धांतों के अनुसार तिब्बतियों को आत्मनिर्भर बनने में सहायता करने के लिए डिज़ाइन की गई परियोजनाओं का समर्थन करने के लिए अपनी आवाज़ और वोट का उपयोग करेगा जो तिब्बती लोगों के जीवन स्तर को बढ़ाने और तिब्बतियों को आत्मनिर्भर बनने में सहायता करेगा।

अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाएं - अमेरिकी वित्त मंत्री संयुक्त राज्य अमेरिका को तिब्बत में परियोजनाओं का समर्थन करने का निर्देश देंगे, यदि परियोजनाएँ उपधारा (घ) में निहित सिद्धांतों के अनुसार डिज़ाइन की गई हैं

निर्यात-आयात बैंक और टीडीए- संयुक्त राज्य अमेरिका के निर्यात-आयात बैंक और व्यापार और विकास एजेंसी को तिब्बत में ऐसी संस्थाओं द्वारा वित्त पोषित या दूसरी जगहों से समर्थित प्रस्तावित परियोजनाओं का समर्थन करना चाहिए जो उपधारा (घ) में निहित सिद्धांतों के अनुसार डिज़ाइन की गई हैं।

तिब्बत परियोजना सिद्धांत- तिब्बत में परियोजनाओं को अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं, अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों, गैर-सरकारी संगठनों और उपधारा (ग) में उल्लिखित अमेरिकी संस्थाओं द्वारा समर्थित किया जाना चाहिए। ऐसी परियोजनाओं को -

- स्थलीय निरीक्षण और तिब्बती लोगों के साक्षात्कारों के माध्यम से उनकी आवश्यकताओं का गहन मूल्यांकन करने के बाद ही क्रियान्वित किया जाना चाहिए।
- इसके पहले सांस्कृतिक और पर्यावरणीय प्रभाव का आकलन किया जाना चाहिए।

- तिब्बतियों की आत्मनिर्भरता और स्वशासन को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

- विकास एजेंसियों की तिब्बती लोगों के प्रति जवाबदेह बनाया जाना चाहिए और परियोजना के सभी चरणों में तिब्बतियों की सक्रिय भागीदारी को सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

- तिब्बती संस्कृति, परंपराओं और उनके परिदृश्य और अस्तित्व की तकनीकों के बारे में तिब्बतियों के ज्ञान और बुद्धि का सम्मान किया जाना चाहिए।

- विकास एजेंसियों द्वारा स्थल की निगरानी की जानी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि असली लाभार्थी समूह को लाभ मिल रहा है।

- परियोजनाओं में काम करने के लिए तिब्बती भाषा का उपयोग करने के लिए तैयार विकास एजेंसियों को ही परियोजनाओं का कार्य दिया जाना चाहिए।

- न तो गैर-तिब्बतियों के तिब्बत में प्रवास और बसने के लिए प्रोत्साहन प्रदान करना चाहिए, न ही इसके लिए कोई सुविधा प्रदान करना चाहिए।

- न ही गैर-तिब्बतियों को तिब्बती भूमि या प्राकृतिक संसाधनों के स्वामित्व के हस्तांतरण के लिए प्रोत्साहन और सुविधा प्रदान करना चाहिए।

तिब्बती नीति अधिनियम (टीपीए) तिब्बत कानून का एक प्रमुख हिस्सा है, जिसे राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू. बुश ने ३० सितंबर, २००२ को एच.आर. १६४६, विदेशी संबंध प्राधिकरण अधिनियम के भाग के रूप में हमंजूरी दी थी। टीपीए का पारित होना अमेरिकी कांग्रेस की तिब्बत मुद्दे में गंभीर रुचि और अमेरिका में तिब्बत के उन समर्थकों के सक्रिय समर्थन से संभव हुआ है, जिन्होंने अपने कांग्रेस प्रतिनिधियों से संपर्क किया।

२) तिब्बती नीति और समर्थन अधिनियम- २०२०

तिब्बती नीति और समर्थन अधिनियम (द तिब्बतन पॉलिसी एंड सपोर्ट ऐक्ट) २००२ के तिब्बती नीति अधिनियम (तिब्बतन पॉलिसी ऐक्ट) को अपडेट और मजबूत करता है, जिसका निर्माण २००२ के ऐतिहासिक तिब्बती नीति अधिनियम के आधार पर हुआ था।

तिब्बती नीति और समर्थन अधिनियम (टीपीएसए) तिब्बत मामले को लेकर अमेरिकी नीति को प्रमुख विस्तार देता है और इसका आधुनिकीकरण करता है। इसके साथ ही एक अमेरिकी कानून तिब्बती लोगों पर चीन के लगातार दमन के खिलाफ सीधी चुनौती प्रस्तुत करता है।

बिल में क्या है :

तिब्बती नीति और समर्थन अधिनियम :

यह तिब्बत को लेकर अमेरिका की यह आधिकारिक नीति बनाएगा कि भावी दलाई लामा सहित तिब्बती प्रमुख बौद्ध लामाओं के पुनर्जन्म की पहचान और मान्यता वर्तमान दलाई लामा के निर्देशों और तिब्बती बौद्ध समुदाय की इच्छाओं के अनुरूप होना चाहिए और इसमें चीनी सरकार का कोई हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए। २०११ में परम पावन १४वें दलाई लामा ने पुनर्जन्म पर अपने विचार रखते हुए एक बयान दिया, जिसमें उन्होंने कहा कि उनका मानना है कि तिब्बतियों और तिब्बती बौद्धों को ही पुनर्जन्म की प्रणाली के बारे में तय करना चाहिए। उन्होंने कहा, 'इसमें हस्तक्षेप करना चीनी कम्युनिस्टों के लिए बहुत ही अनुचित हो। चीनी कम्युनिस्ट तो स्पष्ट रूप से पिछले और भविष्य में भी दलाई लामाओं के पुनर्जन्म के विचार को अस्वीकार करते हैं।'

यदि चीनी अधिकारी भविष्य में भी चीन द्वारा थोपे गए दलाई लामा को नियुक्त करने की योजनाओं को अंजाम देते हैं तो उन पर प्रतिबंध लगाए जाने चाहिए। इन प्रतिबंधों में अमेरिका में उनकी संपत्तियां जब्त करना और उनके प्रवेश को प्रतिबंधित करना शामिल हो सकता है। अमेरिकी विदेश विभाग को चीनी सरकार के हस्तक्षेप के बिना तिब्बती बौद्धों द्वारा स्वयं के धर्मगुरुओं को चुनने की स्वतंत्रता के लिए समर्थन जुटाने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी काम करना होगा।

एशिया भर में एक अरब से अधिक लोगों को जल प्रदान करने वाले तिब्बत में जल की सुरक्षा और वैश्विक औसत से लगभग तीन गुना तेजी से हो रहे जलवायु परिवर्तन पर भी गौर करने की जरूरत है। तिब्बती नीति और समर्थन अधिनियम (टीपीएसए) के तहत अमेरिका तिब्बती पठार के रणनीतिक महत्व और जलवायु परिवर्तन से होने वाले खतरे पर गौर करता है। अमेरिकी विदेश मंत्री को तिब्बत के पर्यावरण की निगरानी करने और इसे संरक्षित करने के तिब्बती लोगों के प्रयासों का समर्थन करने के लिए चीन और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के साथ सहयोग करना होगा। विदेश मंत्री को जल सुरक्षा पर एक क्षेत्रीय ढांचे के गठन को भी प्रोत्साहित करना होगा। इसके अतिरिक्त इस कानून के तहत तिब्बत में चरागाह प्रबंधन नीतियों के विकास और कार्यान्वयन में तिब्बती खानाबदोशों और अन्य तिब्बतियों की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए चीन और गैर सरकारी संगठनों को भी शामिल करना होगा ताकि उनके स्वदेशी अनुभव का उपयोग किया जा सके।

चीन सरकार और दलाई लामा के प्रतिनिधियों के बीच बातचीत के जरिए समाधान निकालने के लिए अमेरिकी विदेश विभाग में तिब्बती मुद्दों के लिए विशेष समन्वयक के कार्यालय के माध्यम से कूटनीतिक प्रयासों को मजबूत किया जाएगा।
जब तक चीन तिब्बत की राजधानी ल्हासा में अमेरिकी वाणिज्य दूतावास की अनुमति नहीं देता, तब तक चीन को अमेरिका में नया वाणिज्य दूतावास खोलने की अनुमति नहीं दी जाएगा।

विधेयक में कहा गया है कि केंद्रीय तिब्बती प्रशासन दुनिया भर के तिब्बती लोगों की आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व और प्रतिबिम्बन करता है।

३) तिब्बत समाधान अधिनियम- २०२४

अमेरिकी राष्ट्रपति जो बिडेन ने तिब्बत-चीन विवाद अधिनियम के लिए एक विधेयक पर हस्ताक्षर किए, जिसे लोकप्रिय रूप से तिब्बत समाधान अधिनियम (रिजॉल्व तिब्बत बिल) के नाम से जाना जाता है। कानून में कहा गया है कि अमेरिका की नीति है कि तिब्बत मुद्दे को बिना किसी पूर्व शर्त के बातचीत के माध्यम से शांतिपूर्ण तरीकों से अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुसार हल किया जाना चाहिए। २०२४ का तिब्बत समाधान अधिनियम लंबे समय से चले आ रहे तिब्बत-चीन विवाद का निपटारा करने के लिए एक महत्वपूर्ण विधायी प्रयास है। यह अधिनियम तिब्बत के लिए अमेरिकी समर्थन को बढ़ावा देता है और तिब्बत के बारे में चीनी सरकार की गलत सूचना को रोकने का प्रयास करता है।

बिल कहता है:

यह अधिनियम चीनी सरकार और दलाई लामा या उनके प्रतिनिधियों या तिब्बती समुदाय के लोकतांत्रिक रूप से चुने गए नेताओं के बीच बिना किसी पूर्व शर्त के ठोस बातचीत को बढ़ावा देता है।

चीनी सरकार और कम्युनिस्ट पार्टी की ओर से तिब्बत के बारे में फैलाए जा रही गलत सूचनाओं का सक्रिय रूप से और सीधे मुकाबला करने का अधिकार तिब्बत के लिए विशेष समन्वयक को देता है। इसमें यह सुनिश्चित करने का भी अधिकार दिया गया है कि अमेरिकी सरकार अपने बयानों और दस्तावेज़ों को जारी कर तिब्बत के बारे में गलत सूचनाओं का मुकाबला करें। यह अधिनियम चीन के इन झूठे दावों को खारिज करता है कि तिब्बत 'प्राचीन काल' से चीन का अभिन्न हिस्सा रहा है।

इस अधिनियम में अमेरिकी सरकार को यह अधिकार दिया गया है कि बातचीत के जरिए तिब्बत मुद्दे का समाधान कराने के लिए समझौते की दिशा में बढ़ने में बहुपक्षीय प्रयासों में अन्य सरकारों के साथ मिलकर काम करे।

यह कानून चीन द्वारा तिब्बती लोगों की विशिष्ट ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और भाषाई पहचान के बारे में उनकी आकांक्षाओं को पूरा करने की आवश्यकता पर जोर देता है।

◆ ५. सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने ब्रिटेन के नए प्रधानमंत्री सर कीर स्टारमर को चुनावी जीत पर बधाई दी

१० जुलाई, २०२४

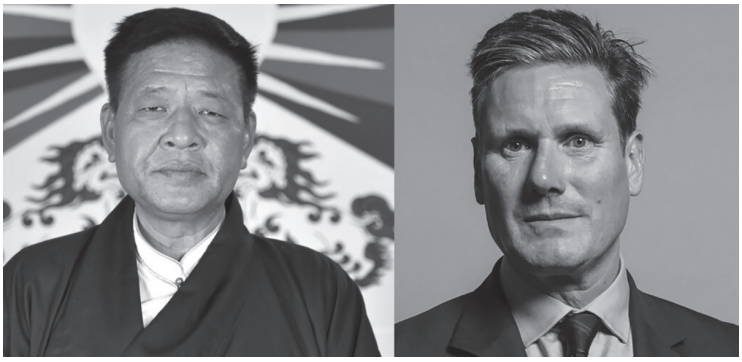

केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने १० जुलाई २०२४ को यूनाइटेड किंगडम (ग्रेट ब्रिटेन) के नए प्रधानमंत्री माननीय सर कीर स्टारमर को हार्दिक बधाई दी। प्रधानमंत्री सर स्टारमर को संबोधित पत्र में सिक्योंग ने चुनावी जीत का श्रेय उनके नेतृत्व में ब्रिटेन के लोगों द्वारा दिखाए गए भरोसे और विश्वास को दिया।

सिक्योंग ने तिब्बती मुद्दे के लिए लंबे समय से समर्थन देने और चिंता जाहिर करते रहने के लिए यूनाइटेड किंगडम की सरकार और लोगों का आभार व्यक्त किया। पत्र में कहा गया है, 'हमारे तिब्बत और यूनाइटेड किंगडम के बीच का ऐतिहासिक संबंध बहुत लंबा, गहरा और अनूठा है। इसकी शुरुआत १८वीं शताब्दी में दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंधों के साथ होती हैं। चीन द्वारा तिब्बत पर आक्रमण के बाद से ब्रिटेन ने हमेशा तिब्बत में मानवाधिकारों की स्थिति पर चिंता व्यक्त की है।'

पत्र में तिब्बत और यूनाइटेड किंगडम के बीच गहरे संबंधों पर प्रकाश डाला गया तथा तिब्बत में मानवाधिकारों के लिए यूके के दृढ़ समर्थन का उल्लेख किया गया है। सिक्योंग ने आज तिब्बत के सामने मौजूद चुनौतियों के बीच तिब्बती मुद्दे पर नए सिरे से ध्यान देने और विश्व बिरादरी को इसके समर्थन लाने में यूके के नेतृत्व के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने लिखा, 'इन मूलभूत सिद्धांतों के प्रति आपकी सरकार की प्रतिबद्धता निस्संदेह न्याय और स्वतंत्रता की हमारी सामूहिक खोज को मजबूत करेगी।'

पत्र में सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने लोकतांत्रिक मूल्यों की लंबी विरासत रखने वाले देश के तौर पर विख्यात यूनाइटेड किंगडम से लोकतंत्र, स्वतंत्रता और मानवाधिकारों के मूल्यों की वकालत करना जारी रखने का आग्रह किया। सिक्योंग ने लिखा, 'हम यूनाइटेड किंगडम के प्रधानमंत्री के रूप में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका में आपकी सफलता की कामना करते हैं। आपके मार्गदर्शन में हमें विश्वास है कि यूके समृद्ध होगा और फलता-फूलता रहेगा।'

◆ ६. सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने वाशिंगटन डीसी में अमेरिकी सांसदों से मिल आभार प्रकट किया

२६ जुलाई, २०२४

वाशिंगटन डीसी। सिक्योंग पेन्पा शेरिंग २२ से २५ जुलाई तक वाशिंगटन डीसी के आधिकारिक दौरे पर थे। इस दौरान उन्होंने कई कार्यक्रमों में हिस्सा लिया। इस दौरान उन्होंने 'तिब्बत समाधान अधिनियम (रिज़ॉल्व तिब्बत ऐक्ट)' को समर्थन देकर कांग्रेस से पारित करने के लिए अमेरिकी सांसदों का व्यक्तिगत रूप से आभार व्यक्त किया।

अमेरिकी सांसदों के साथ बैठक के अलावा सिक्योंग ने तिब्बत से संबंधित मुद्दों पर अमेरिकी विदेश मंत्रालय और व्हाइट हाउस के अधिकारियों के साथ बैठकें कीं। सिक्योंग ने ब्रूकिंग्स इंस्टीट्यूशन में बंद कमरे में आयोजित विशेषज्ञ गोलमेज सम्मेलन में भी भाग लिया, जिसका संचालन इंस्टीट्यूशन के चीन केंद्र के निदेशक रयान हास ने किया। अन्य कार्यक्रमों में यूएसएआईडी अधिकारियों और कांग्रेस के कर्मचारियों के साथ बैठकें शामिल थीं।

'तिब्बत-चीन विवाद के समाधान को बढ़ावा देने वाले अधिनियम' पर हस्ताक्षर हो जाने के उपलक्ष्य में कैपिटल विज़िटर सेंटर में एक स्वागत समारोह आयोजित किया गया। तिब्बती राजनीतिक नेता सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने विधेयक के प्रायोजकों के प्रति तिब्बती लोगों की ओर से आभार प्रकट किया। स्वागत समारोह में स्पीकर एमेरिटा नैन्सी पेलोसी के अलावा चेयरमैन माइकल मैककॉल, सांसद जिम मैकगवर्न और सांसद जो विल्सन भी शामिल हुए। स्वागत समारोह में तिब्बती लोगों द्वारा अमेरिका को धन्यवाद देने वाला एक वीडियो भी दिखाया गया और उपस्थित लोगों ने उसका आनंद लिया।

सिक्योंग ने कैपिटल एरिया तिब्बती कम्युनिटी सेंटर में 'तिब्बत समाधान अधिनियम (रिज़ॉल्व तिब्बत ऐक्ट)' के कानून बनने के सामुदायिक समारोह में भी भाग लिया और सभा को संबोधित किया। अपने भाषण में सिक्योंग ने कहा, 'तिब्बतियों के लिए जश्न मनाना बहुत दुर्लभ है। पहले भी ऐसे कई मौके आए, जब तिब्बतियों ने जश्न मनाया था। इनमें एक समय वह था, जब परम पावन को नोबेल शांति पुरस्कार, यूएस कांग्रेसनल गोल्ड मेडल और कई संस्थानों और संगठनों या अन्य स्थानों से मान्यताएं मिली थीं। उन्होंने आगे कहा कि यह पहली बार तिब्बतियों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण दिन बनकर आया है। इस दिन को हम अमेरिकी सरकार द्वारा 'तिब्बत समाधान अधिनियम (रिज़ॉल्व तिब्बत ऐक्ट)' जैसे कानून पारित करने के निर्णय के कारण मना रहे हैं। यह कानून तिब्बत पर चीन के दावे के हर पहलू को चुनौती देता है।'

'तिब्बत समाधान अधिनियम (रिज़ॉल्व तिब्बत ऐक्ट)' को चरणबद्ध ढंग से आगे बढ़ने की प्रक्रिया के मद्देनजर सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने आभार व्यक्त करते हुए कहा, 'मैं स्पीकर एमेरिटा नैन्सी पेलोसी को धन्यवाद देना चाहता हूं। यह बिल २०२२ में स्पीकर के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान उनके कार्यालय से आया था। उस समय, इंटरनेशनल कैंपेन फ़ॉर तिब्बत (आईसीटी) के अध्यक्ष के रूप में रिचर्ड गेरे, सिक्योंग के रूप में मैं और तिब्बत और आईसीटी के कार्यालय की टीम ने स्पीकर पेलोसी और कांग्रेसी जिम मैकगवर्न से मुलाकात की थी। इस बैठक के दौरान हमने तीन बुनियादी मुद्दों पर रणनीति बनाई थी। ये मुद्दे थे, वाशिंगटन डीसी में तिब्बत पर विश्व संसदीय सम्मेलन का आयोजन करना था। इस तरह का पिछला सम्मेलन १९९७ में और जून २०२२ में आयोजित किया गया था। लगभग उसी समय तेनज़िन नामग्याल टेथोंग, एलेन बोर्क, चीनी इतिहासकार प्रोफेसर लाओ और प्रोफेसर माइकल द्वारा तिब्बत की ऐतिहासिक स्थिति पर गवाही हुई थी। उस गवाही के आधार पर, इस 'तिब्बत समाधान अधिनियम' को प्रतिनिधि सभा में सांसद जिम मैकगवर्न और चेयरमैन मैककॉल जबकि सीनेट में सीनेटर टॉड यंग और सीनेटर जेफ मार्कले द्वारा प्रायोजित किया गया था। सीनेट में सीनेटर कार्डिन ने विदेश संबंध समिति के अध्यक्ष के रूप में इसका समर्थन किया था। हम उनके समर्थन के लिए बहुत आभारी हैं।'

सिक्योंग ने आगे कहा, 'जैसा कि स्पीकर पेलोसी ने धर्मशाला का दौरा करते समय कहा था कि तिब्बती लोगों के कारण ही यह विधेयक पारित हो पाया। इसलिए, मैं अमेरिका में सभी तिब्बतियों, तिब्बत समर्थक समूहों, तिब्बती संघों, तिब्बती पक्ष की वकालत करनेवालों, विशेष रूप से तिब्बत की युवा पीढ़ी को धन्यवाद देना चाहता हूं जो इस साल मार्च में कैपिटोल हिल पर इसके समर्थन में इकट्ठा हुए थे। मुझे यह भी पता है कि कांग्रेस के कर्मचारियों से भी बहुत सारे इनपुट और समर्थन मिले हैं। उन कर्मचारियों में से कई सारे यहां मौजूद हैं। ये लोग ही इस विधेयक के वास्तुकार रहे हैं।'

◆ ७. स्पीकर खेंपो सोनम तेनफेल ने 'जैपनिज पार्लियामेंटेरियन सपोर्ट ग्रुप फॉर तिब्बत' से मुलाकात की

३१ जुलाई, २०२४

टोक्यो। टोक्यो के आधिकारिक दौरे पर चल रहे निर्वासित तिब्बती संसद के स्पीकर खेंपो सोनम तेनफेल ने जापानी संसद भवन का दौरा किया और टोक्यो के नागाटाचो में संसद भवन के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन हॉल में 'जैपनिज पार्लियामेंटेरियन सपोर्ट ग्रुप फॉर तिब्बत' की कार्य समिति के सदस्यों को संबोधित किया।

'जैपनिज पार्लियामेंटेरियन सपोर्ट ग्रुप फॉर तिब्बत' के अध्यक्ष माननीय शिमोमुरा हकुबुन ने स्पीकर खेंपो सोनम तेनफेल का स्वागत किया और उन्हें तिब्बत मुद्दे पर जापानी सांसदों के जोरदार समर्थन से अवगत कराया। अध्यक्ष शिमोमुरा ने औपनिवेशिक प्रणाली के आवासीय स्कूलों और चीन में बढ़ते दमन के बारे में भी बात की। उन्होंने समिति को २०२५ में टोक्यो में तिब्बत पर नौवें विश्व संसदीय सम्मेलन (डब्ल्यूपीसीटी) के आयोजन की योजना और इसे कैसे अंजाम दिया जाए, इसकी जानकारी दी।

आदरणीय खेंपो सोनम तेनफेल ने अध्यक्ष शिमोमुरा हकुबुन, सचिव इशिकावा और अन्य लोगों को अपना स्वागत करने और तिब्बत मुद्दे और तिब्बत हाउस जापान कार्यालय को दिए जा रहे हर प्रकार के समर्थन के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने तिब्बत में जारी दमन पर संसद समिति को नवीनतम जानकारी से अवगत कराया और गोलोक में जिग्मे ग्यालत्सेन स्कूल के हाल ही में बंद होने पर बात की। उन्होंने सदस्यों को यह भी बताया कि कैसे परम पावन दलाई लामा ने कड़ी मेहनत करके निर्वासन में लोकतांत्रिक शासन की शुरुआत की।

स्पीकर खेंपो ने इस अवसर पर तिब्बत, उग्यूर, दक्षिणी मंगोलिया और हांगकांग में चीनी सरकार द्वारा मानवाधिकारों के उल्लंघन की निंदा करने वाले २०२२ के प्रस्तावों के लिए जापानी संसद को धन्यवाद दिया। उन्होंने चीन सरकार द्वारा तिब्बत और अन्य कब्जे वाले क्षेत्रों में मानवाधिकारों के उल्लंघन पर जिनेवा यूनिवर्सल पीरियोडिकल रिपोर्ट (यूपीआर) सत्र में इस साल बयान के लिए जापानी सरकार को धन्यवाद दिया। स्पीकर खेंपो सोनम तेनफेल ने जापान की इस बात के लिए प्रशंसा की कि यहां की संसद के दोनों सदनों में तिब्बत मुद्दे का समर्थन करने वाले सांसदों की संख्या सबसे अधिक है। उन्होंने अगले साल टोक्यो में नौवें डब्ल्यूपीसीटी के आयोजन में उनकी मदद और सहयोग की सराहनीय अपेक्षा भी की।

जापान और पूर्वी एशिया के लिए परम पावन दलाई लामा के संपर्क कार्यालय के प्रतिनिधि डॉ. शावांग ग्यालपो आर्य ने हाल ही में अमेरिकी कांग्रेस द्वारा पारित कानून 'रिज़ोल्व तिब्बत ऐक्ट' के बारे में समिति के सदस्यों को जानकारी दी। इस विधेयक पर अमेरिकी राष्ट्रपति जो बिडेन ने हस्ताक्षर कर दिए हैं और यह १२ जुलाई से कानून बन गया है। उन्होंने तिब्बत पर अमेरिकी नीति को दर्शाते हुए अधिनियम के कुछ आवश्यक बिंदुओं की ओर इशारा किया और सांसदों से इस तथ्य को पहचानने और जोर देने का अनुरोध किया कि तिब्बत प्राचीन काल से कभी भी चीन का हिस्सा नहीं रहा है। उन्होंने ०७ जुलाई को टोक्यो विश्वविद्यालय में 'चीनी औपनिवेशिक बोर्डिंग स्कूल' मुद्दे को लेकर आयोजित एक सेमिनार के दौरान पारित किए गए प्रस्ताव को भी पढ़ा, जिसमें तिब्बतियों, उग्यूरों और दक्षिणी मंगोलों के प्रतिनिधियों से आग्रह किया गया है कि वे अपने-अपने समर्थन वाले संसदीय समर्थक समूहों से संबंधित संसद में इस चीनी औपनिवेशिक बोर्डिंग स्कूल के मुद्दे को उठाने का अनुरोध करें।

इशिकावा अकिमासा ने तिब्बत को लेकर विश्व संसदीय सम्मेलन पर चर्चा शुरू की और माननीय खेंपो सोनम तेनफेल और प्रतिनिधि आर्य ने सम्मेलन के उद्देश्य और टोक्यो में इसकी योजना बनाने के कारणों को लेकर व्याख्या की। उन्होंने इसके पक्ष के तर्कों और इसे आगे बढ़ाने के मुद्दे को लेकर भी चर्चा की।

जापान एक स्वतंत्र और लोकतांत्रिक राष्ट्र है। यह दुनिया के सबसे सफल लोकतंत्रों में से एक है, जहां कानून और अंतरराष्ट्रीय मानदंडों का पालन किया जाता है। इसके अलावा, तिब्बत मुद्दे का समर्थन करने वाले सांसदों की सबसे बड़ी संख्या भी जापान में ही है। कई जापानी मठ, शिंटो संस्थान और आम जनता परम पावन दलाई लामा के भक्त हैं और तिब्बती स्वतंत्रता आंदोलन का पुरजोर समर्थन करते हैं।

माननीय खेंपो सोनम तेनफेल ने तिब्बत हाउस ऑफिस का दौरा किया और बाद में जापान में तिब्बती समुदाय के सदस्यों से मुलाकात की और उन्हें केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) की गतिविधि के बारे में जानकारी दी। इसके साथ ही उन्होंने टोक्यो में अगले साल के सम्मेलन के लिए उनके सहयोग और मदद का अनुरोध किया।

◆ ८. कालोन थरलम डोल्मा चांगरा ने जापानी विश्वविद्यालयों के छात्रों को संबोधित किया

११ जुलाई, २०२४

टोक्यो। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) की शिक्षा मंत्री थरलम डोल्मा चांगरा ने चिबा प्रिफेक्चर स्थित दो जापानी विश्वविद्यालयों का दौरा किया और सामान्य रूप से तिब्बती शिक्षा प्रणाली और विशेष रूप से सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक (एसईई) शिक्षण के बारे में छात्रों और संकाय सदस्यों के बीच अपना व्याख्यान दिया।

रीताकू विश्वविद्यालय के अध्यक्ष मोटोका हिरोइके और कर्मचारियों ने शिक्षा कालोन थरलम डोल्मा चांगरा, प्रतिनिधि डॉ. शावांग ग्यालपो आर्य और सचिव ताशी यांगज़ोम का विश्वविद्यालय में स्वागत किया और अगवानी की। कालोन ने भी उनका अभिवादन किया और उन्हें तिब्बती खटक (स्कार्फ) भेंट किए। साथ ही कालोन ने उन्हें आमंत्रित करने और छात्रों को संबोधित करने का अवसर देने के लिए अध्यक्ष और विश्वविद्यालय को धन्यवाद दिया।

दोपहर में कालोन थरलम डोल्मा चांगरा ने चिबा इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (सीआईटी) का दौरा किया। चेयरमैन सेतोकुमा ओसामू और बोर्ड के सदस्यों, संकाय सदस्यों और कर्मचारियों ने कालोन और उनके साथ पधारे गणमान्य हस्तियों का चेयरमैन के कार्यालय में स्वागत किया। कलोन ने तिब्बती सफेद स्कार्फ भेंट किए और तिब्बती छात्रों को शिक्षित करने में उनके बहुमूल्य और निरंतर सहायता के लिए चेयरमैन और विश्वविद्यालय को धन्यवाद दिया।

विश्वविद्यालयों में दो अलग-अलग व्याख्यानों में कालोन ने तिब्बती शिक्षा प्रणाली पर बात की और उन्हें एसईई सीखने की अवधारणा और विकास और दोनों विश्वविद्यालयों के छात्रों और संकाय सदस्यों के लिए इसके महत्व के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा, 'आधुनिक समय में शिक्षा के उद्देश्य और लक्ष्य बदल गए हैं। यह प्राचीन काल की तरह के नहीं रहे हैं। परम पावन महान १४वें दलाई लामा का दृढ़ विश्वास है कि शिक्षा का विस्तार करुणा, सहिष्णुता और दया जैसे मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए किया जाना चाहिए, ताकि सभी संवेदनशील प्राणी शांति और सद्भाव से रह सकें। १९५९ में तिब्बत पर चीनी आक्रमण के बाद भारत की शरण में आने के तुरंत बाद परम पावन ने अपना विजन स्पष्ट कर दिया था। उनमें अच्छी आधुनिक और पारंपरिक शिक्षा प्रदान करना, मानवीय मूल्यों को शामिल करना, हमारी समृद्ध संस्कृति, परंपरा, भाषा, धर्म और विरासत को संरक्षित करना शामिल है।'

धर्मनिरपेक्ष नैतिकता और एसईई लर्निंग पर बोलते हुए कालोन ने कहा, 'धर्मनिरपेक्ष नैतिकता और एसईई शिक्षण- दोनों का उद्देश्य स्वयं की, दूसरों की और सभी की भलाई के लिए '३ एच' यानी (हेड, हार्ट एंड हैंड) सिर, दिल और हाथ को शिक्षित करना है। विभिन्न स्रोतों से मिली जानकारी से पता चलता है कि जहां भी एसईई शिक्षण प्रणाली को लागू किया गया है, वहां के छात्रों के व्यवहार में बहुत बड़ा बदलाव देखा जा रहा है।'

संकाय सदस्यों और छात्रों ने एसईई लर्निंग पर कालोन की बात की बहुत प्रशंसा की और इसके बारे में और अधिक जानने की इच्छा व्यक्त की। छात्रों ने पूछा कि वयस्क समाज में एसईई लर्निंग कैसे लागू की जा सकती है और एसईई लर्निंग में देशभक्ति की भूमिका क्या है। कालोन ने एमोरी विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित एसईई लर्निंग पर सामग्री और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के शिक्षा विभाग की शिक्षा नीति का दस्तावेज विश्वविद्यालयों को दिया।

रीताकु विश्वविद्यालय के प्रो. होरियुची ने तिब्बती शिक्षा प्रणाली और एसईई लर्निंग के उद्देश्य पर अपनी उत्कृष्ट प्रस्तुति के लिए कालोन को धन्यवाद दिया। उन्होंने मास्टर चिकुरो हिरोइके के मॉर्फोलॉजी शिक्षण और एसईई लर्निंग के बीच समानता होने की बात कहीं।

दोनों अध्यक्षों- सेटोकुमा हिरोइके और मोटोका हिरोइके ने एसईई लर्निंग की अवधारणा की प्रशंसा की। उन्होंने सभी संवेदनशील प्राणियों के लिए एक बेहतर दुनिया बनाने और चलाने के लिए परम पावन दलाई लामा के प्रयासों की बहुत बहुत प्रशंसा की। उन्होंने हिंसा और घृणा से मुक्त एक दयालु दुनिया बनाने के उनके प्रयासों में परम पावन दलाई लामा और सीटीए को अपना समर्थन देने का वादा किया।

विश्वविद्यालय में तिब्बती छात्रों ने कालोन के साथ बैठक की और अपनी सतत शिक्षा और योजनाओं के बारे में जानकारी दी। बैठक के दौरान कालोन ने तिब्बती मुद्दे के महत्व पर जोर दिया और उन्हें एक समृद्ध तिब्बती समुदाय के निर्माण और विकास में योगदान देने के लिए अपने अध्ययन और ज्ञान को समर्पित करने के लिए प्रोत्साहित किया।

◆ ९. शिक्षा मंत्री थरलम डोल्मा चांगरा ने सीबीएसई सचिव से मुलाकात की

१६ जुलाई, २०२४

नई दिल्ली। शिक्षा कालोन थरलम डोलमा चांगरा ने १५ जुलाई २०२४ की दोपहर को केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई), दिल्ली के सचिव श्री हिमांशु गुप्ता, आईएएस से मुलाकात की।

बैठक के दौरान शिक्षा कालोन ने सचिव को सीबीएसई के तहत गदेन शार्त्से थोएसम नोरलिंग मठ विद्यालय, मुंडगोड की संबद्धता के लिए विशेष रूप से विचार करने के लिए प्रशंसा की। उन्होंने सचिव को इस संबंध में एक आधिकारिक पत्र भी सौंपा। सचिव ने आश्वासन दिया कि वह आवेदनों और सहायक दस्तावेजों की समीक्षा करेंगे और हरसंभव तरीके से सहायता करेंगे। बैठक के समापन पर गदेन शार्त्से मठ की ओर से सचिव को धन्यवाद दिया गया और प्रशंसा के प्रतीक के तौर मंजुश्री की प्रतिमा और पारंपरिक दुपट्टा (खटक) भेंट किया गया।

इससे पहले सुबह शिक्षा कालोन ने दिल्ली के संस्कृत प्रचार फाउंडेशन के कार्यकारी अधिकारी के. लक्ष्मीनारायणन से संक्षिप्त मुलाकात की। उस दिन आयोजित दो बैठकों में शिक्षा कालोन के साथ अतिरिक्त सचिव, दक्षिण क्षेत्र के मुख्य प्रतिनिधि अधिकारी जिग्मे सुल्त्रिम, शिक्षा विभाग के अवर सचिव शेरिंग यांगकी तथा प्रधानाचार्य वेन गेशे लोबसांग शेरिंग और मुंडगोड स्थित गेडेन शार्त्से थोएसम नोर्लिंग मठ के कार्यालय सचिव वेन तेनजिन खेदुप भी मौजूद थे।

◆ १०. धर्मशाला में परम पावन दलाई लामा के ८९वें जन्मदिन का स्मरण

०६ जुलाई, २०२४

धर्मशाला। ०६ जुलाई २०२४ को परम पावन दलाई लामा के ८९वें जन्मदिन के अवसर पर केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के नेतृत्व में तिब्बती लोग तिब्बती समुदाय के सबसे बड़े उत्सव को मनाने के लिए त्सुगलागखांग प्रांगण में एकत्र हुए।

इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सिक्किम के माननीय मुख्यमंत्री श्री प्रेम सिंह तमांग और अन्य विशिष्ट अतिथियों ने उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इनमें सिक्किम विधानसभा के अध्यक्ष मिंगमा नोरबू शेरपा, अरुणाचल पूर्व से लोकसभा सांसद श्री तापिर गाओ और सिक्किम के कई अन्य गणमान्य अधिकारी और मंत्री शामिल थे। इसके अतिरिक्त, इस कार्यक्रम में कनाडा के ओंटारियो से सांसद और माननीय उपाध्यक्ष भुटिला कारपोचे और स्विट्जरलैंड के ज्यूरिख कैंटन में मीलेन जिले की नगरपालिका ओएटविल एम सी के मेयर नामग्याल गंगशोंत्सांग ने भी भाग लिया।

सिक्योंग पेन्पा शेरिंग और स्पीकर सोनम तेनफेल द्वारा क्रमशः काशाग और तिब्बती संसद के वक्तव्य देने के बाद विशिष्ट अतिथियों ने परम पावन दलाई लामा को उनके ८९वें जन्मदिन पर अपनी शुभकामनाएं दीं। सबसे पहले ओएटविल एम सी के मेयर नामग्याल गंगशोंत्सांग ने अपने भाषण में समुदाय की ओर से बधाई दी और आभार व्यक्त किया। उन्होंने तिब्बती मुद्दे और वैश्विक मानवीय प्रयासों के लिए परम पावन के आजीवन समर्पण के गहन प्रभाव पर प्रकाश डाला।

मुख्य अतिथि ने अपने भाषण की शुरुआत केंद्रीय तिब्बती प्रशासन द्वारा दिए गए निमंत्रण के लिए अपनी हार्दिक प्रशंसा व्यक्त करते हुए की और ०६ जुलाई को परम पावन के जन्मदिन को दुनिया भर में मनाए जाने पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने परम पावन के मार्गदर्शन में विकसित करुणा और ज्ञान के प्रतीक के रूप में धर्मशाला, विशेष रूप से मैक्लोडगंज की सराहना की। परम पावन के चुनौतीपूर्ण देखभाल और उसके बाद के वैश्विक प्रभाव को स्वीकार करते हुए उन्होंने परम पावन द्वारा अपनाए गए बौद्ध धर्म, शांति और करुणा की सार्वभौमिक शिक्षाओं को रेखांकित किया। सम्मानित अतिथि ने परम पावन के स्वास्थ्य और दीर्घायु जीवन के लिए गर्मजोशी से शुभकामनाएं दीं और परम पावन की मेजबानी करने और उनकी यात्राओं का लाभ

उठाने में सिक्किम के गौरव का उल्लेख किया। मुख्यमंत्री ने सद्भाव और स्थिरता को बढ़ावा देने में परम पावन की शिक्षाओं के परिवर्तनकारी प्रभाव पर जोर दिया, अटूट समर्थन का वचन दिया और एक शांतिपूर्ण दुनिया के लिए परम पावन के सिद्धांतों के प्रचार करने का आश्वासन दिया।

इसके अलावा, विशिष्ट अतिथि भुटिला करपोचे ने अपने संबोधन में तिब्बतियों के हित के लिए परम पावन के अथक परिश्रम पर विचार किया और आभार व्यक्त किया। करपोचे ने विशेष रूप से २४ वर्ष की आयु में तिब्बत से निर्वासन के बाद से परम पावन के दूरदर्शी नेतृत्व की प्रशंसा की। उन्होंने एक सम्मानित आध्यात्मिक धर्मगुरु के रूप में परम पावन की वैश्विक प्रतिष्ठा पर जोर दिया। उन्होंने परम पावन की दुनिया भर में हाल में हो रही प्रशंसाओं पर प्रकाश डाला। इसमें एशियाई बौद्ध शांति सम्मेलन द्वारा दलाई लामा पदनाम को प्रमुख बौद्ध धर्मगुरु के रूप में मान्यता देना और उन्हें कनाडा की मानद नागरिकता देना शामिल है। उन्होंने लोगों से परम पावन के शांति, सद्भाव और एकता के सिद्धांतों को आदर के साथ बनाए रखने का आह्वान किया और उनके स्थायी स्वास्थ्य और दीर्घायु के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देकर अपने संबोधन को समाप्त किया।

श्री तापिर गाओ ने अपने संबोधन में परम पावन के जीवन और शिक्षाओं का लाभ लेने का अवसर पाने के लिए उनके प्रति गहरा आभार व्यक्त किया। परम पावन की उल्लेखनीय यात्रा के बारे में चर्चा करते हुए श्री तापिर गाओ ने परम पावन के भारत आगमन के ऐतिहासिक महत्व पर जोर दिया, जो भारत और तिब्बत के बीच मित्रता और एकजुटता के गहरे बंधन का प्रतीक है।

इस कार्यक्रम में तिब्बती स्कूलों, धर्मशाला में क्षेत्रीय तिब्बती संघों और तिब्बती प्रदर्शन कला संस्थान (टीआईपीए) की ओर से जीवंत सांस्कृतिक प्रदर्शन किया गया और महत्वपूर्ण साहित्यिक पुस्तकों के विमोचन हुए। इस अवसर पर निर्वासित तिब्बती संसद और काशाग द्वारा मुख्य अतिथियों और अतिथियों को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित भी किया गया।

◆ ११ प्रतिनिधि डॉ. शांवांग ग्यालपो आर्य ने टोक्यो में अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता शिखर सम्मेलन में तिब्बत में धर्म पर चीनी अत्याचारों का मुद्दा उठाया

२३ जुलाई, २०२४

टोक्यो। अमेरिका स्थित अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता (आईआरएफ) संगठन ने कुछ अंतरराष्ट्रीय और क्षेत्रीय सह-आयोजकों के साथ मिलकर २२ जुलाई २०२४ को टोक्यो के न्यू ओटानी होटल के कॉन्फ्रेंस हॉल में एशिया में धार्मिक स्वतंत्रता पर चर्चा और बहस करने के लिए आईआरएफ शिखर सम्मेलन एशिया- २०२४ का आयोजन किया।

एक दिवसीय कार्यक्रम की अध्यक्षता आईआरएफ में पूर्व राजदूत सैम ब्राउनबैक और आईआरएफ पर अमेरिकी आयोग की पूर्व अध्यक्ष कैटरीना लैंटोस स्वेट ने की। अपने उद्घाटन भाषण में राजदूत सैम ब्राउनबैक ने विभिन्न देशों के वक्ताओं और प्रतिभागियों का स्वागत किया और कहा कि यह एक महत्वपूर्ण मानवाधिकार आंदोलन है जो विभिन्न देशों में अधिनायकवादी शासन के तहत धार्मिक स्वतंत्रता के उल्लंघन पर चर्चा करता है और उसका निवारण करता है।

उन्होंने कहा, 'चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सीसीपी) अभी तीन नरसंहार कर रही है। पहला, तिब्बती बौद्धों को तिब्बत में दशकों से हाशिए पर रखा जा रहा है और सताया जा रहा है, दूसरा उग्यूर बहुल मुस्लिम आबादी से क्रूरता की जा रही और तीसरे फालुन गोंग साधकों के साथ क्रूरता की जा रही है। हालांकि, उन सभी को अपने विश्वास और आस्था का पालन करने का अधिकार है। अगर हम उनके लिए खड़े होकर नहीं बोलेंगे तो अगली बार हमारी बारी होगी।'

शिखर सम्मेलन में चार पैनल थे और मुख्य भाषण पूर्व अमेरिकी विदेश मंत्री माइक पोम्पिओ का हुआ। उन्होंने एशिया में धार्मिक स्वतंत्रता के भू-राजनीतिक महत्व पर बात की। ताइवान के राष्ट्रपति विलियम लाई ने शिखर सम्मेलन को ऑनलाइन संबोधित किया। चार प्रमुख पैनलों के समक्ष विचारणीय मुख्य मुद्दे के तौर पर थे- एशियाई देशों में नरसंहार के प्रभाव, धार्मिक बहुलवाद, धार्मिक स्वतंत्रता और अधिनयायकवादी सरकारों के शासन के तहत विश्वास की

स्वतंत्रता की स्थिति।

परम पावन दलाई लामा के संपर्क कार्यालय के प्रतिनिधि डॉ. आर्य शांवांग ग्याल्पो ने क्षेत्र में नरसंहार के प्रभाव पर बात करने के लिए एक पैनलिस्ट के तौर पर भाग लिया। डॉ. आर्य ने तिब्बत की स्थिति और सीसीपी शासन के तहत ७० से अधिक वर्षों तक तिब्बती पहचान, संस्कृति और धर्म को नष्ट करते रहने को लेकर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने लारुंग गर और याचेन गर मठ परिसरों के दिनदहाड़े हुए विध्वंश के बारे में जानकारी दी और पूर्वी तिब्बत के खाम क्षेत्र में ९९ फुट की बुद्ध प्रतिमा, ३३ फुट की मैत्रेय प्रतिमा और ४५ फुट की गुरु पद्मसंभव की प्रतिमा को ध्वस्त करने के बारे में भी बात की। उन्होंने तिब्बती धार्मिक मामलों, खासकर परम पावन दलाई लामा के पुनर्जन्म के चयन में में चीनी हस्तक्षेप के बारे में बात की।

इस अवसर पर डॉ. आर्य ने हाल ही में 'तिब्बत समाधान अधिनियम' के लिए अमेरिकी कांग्रेस और सरकार को धन्यवाद दिया और अन्य लोकतांत्रिक देशों से भी इसी तरह के समर्थन का आग्रह किया।

एशिया के विभिन्न धार्मिक समुदायों के प्रतिनिधियों ने अपने-अपने देशों में धार्मिक स्वतंत्रता के दमन और इसकी आजादी के अधिकारों के उल्लंघन का सामना करने और इस मुद्दे को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उठाने की आवश्यकता पर जोर दिया। आयोजकों ने धार्मिक स्वतंत्रता के महत्व और धर्मों से महान सभ्यताओं के उद्भव और विकास पर बात की।

शिखर सम्मेलन की ख्याति का आलम यह था कि सम्मेलन के सारे टिकट पहले ही बिक गए। इसके आयोजकों और इसमें भाग लेने वाले प्रतिभागियों ने बहुत संतुष्टि और सीखने को लेकर अपने अच्छे अनुभवों को व्यक्त किया। उन्होंने क्षेत्रों में धार्मिक और मानवाधिकारों के उल्लंघन को रोकने के लिए अधिनायकवादी शासन को भी चुनौती दी।

◆ १२. कैनबरा स्थित तिब्बत कार्यालय और चीनी लोकतंत्र गठबंधन ने 'शी जिनपिंग के बाद चीन-तिब्बत संबंध' विषय पर संगोष्ठी आयोजित की

१५ जुलाई, २०२४

सिडनी (ऑस्ट्रेलिया)। कैनबरा स्थित तिब्बत कार्यालय ने चीनी लोकतंत्र गठबंधन के साथ मिलकर १० जुलाई २०२४ को सिडनी विश्वविद्यालय में 'शी जिनपिंग के बाद के युग में चीन-तिब्बत संबंध' शीर्षक से संगोष्ठी आयोजित की।
संगोष्ठी में प्रतिष्ठित शोधकर्ताओं, कार्यकर्ताओं और चीन के प्रमुख विशेषज्ञों की उपस्थिति में व्यापक चर्चा हुई। चर्चा में चीन-तिब्बत संबंधों पर शी-जिनपिंग की नीतियों के प्रभाव से लेकर उनके शासन में तिब्बत में हो रहे भयावह सांस्कृतिक संहार तक के बारे में चर्चा हुई।

अपने शुरुआती भाषण में प्रतिनिधि कर्मा सिंगे ने स्थिति की गंभीरता को रेखांकित करते हुए कहा, 'आज, चीनी सरकार के विस्तारवादी लालच और दमनकारी नीतियों के कारण असुरक्षा, अनिश्चितता और भय की गहरी भावना व्याप्त है। अगर इन नीतियों को चुनौती नहीं दी गई, तो दुनिया की शांति और सुरक्षा गंभीर खतरे में पड़ जाएगी।' उन्होंने आगे बताया कि चीन की नीति तिब्बत को अपने लिए सुरक्षित बनाने और तिब्बती लोगों को चीन में बसाने की है, जो शी जिनपिंग के दीर्घकालिक विलयीकरण अभियान का हिस्सा है।

तिब्बत में चीन की विलयीकरण और शिक्षा नीतियों के एक प्रमुख विशेषज्ञ डॉ. ग्यालो ने हान-केंद्रित राष्ट्रवाद नीति बनाने के लिए शी जिनपिंग के समग्र दृष्टिकोण और चीनी सरकार द्वारा तिब्बती बच्चों के लिए अनिवार्य आवासीय स्कूल शिक्षा लागू करने के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने इस स्कूल व्यवस्था को तिब्बतियों के जबरन चीनीकरण करने और तिब्बत का संस्कृति संहार की नीति के रूप

में वर्णित किया और इस पर अपनी गहन अंतर्दृष्टि से अवगत कराया।

ताइवान में तिब्बत कार्यालय के प्रतिनिधि बावा कलसांग ग्यालत्सेन ने चीन-तिब्बत संघर्ष का शांतिपूर्ण समाधान खोजने में मध्यम मार्ग नीति के प्रति केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की प्रतिबद्धता के बारे में बताया। आगे उन्होंने दोनों समुदायों के बीच मित्रता को मजबूत करने के लिए तिब्बती और चीनी समुदायों के बीच अधिक महत्वपूर्ण संपर्क और सहयोग करने के महत्व पर जोर दिया।

अंत में यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी सिडनी के एसोसिएट प्रोफेसर और ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड एलायंस ऑफ विक्टिम्स ऑफ चाइनीज कम्युनिस्ट पार्टी के अध्यक्ष प्रोफेसर फेंग चोंगयी ने बताया कि किसी भी राष्ट्रीयता के लिए आत्मनिर्णय का अधिकार प्राप्त करना तभी संभव हो सकता है जब चीन में एक लोकतांत्रिक संवैधानिक सरकार की स्थापना हो जाए। उन्होंने आगे बताया कि आत्मनिर्णय को साकार करने के लिए एक लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था के तहत लोकतांत्रिक बातचीत या जनमत संग्रह आवश्यक है। इसके हो जाने से स्वायत्तता, स्वतंत्रता या यथास्थिति बनाए रखना संभव हो सकता है।

चीनी लोकतंत्र गठबंधन के अध्यक्ष डॉ. जिन जियांग, सिडनी चीनी-तिब्बती मैत्री समूह के अध्यक्ष डुओदुओ झांग और ताइवान की सहयोगी सोफिया साई ने सेमिनार का संचालन किया।

कैनबरा स्थित तिब्बत कार्यालय में चीनी संपर्क अधिकारी दावा सांगमो ने समापन भाषण दिया।

◆ १३. चीन सरकार ने एक और विख्यात तिब्बती निजी स्कूल को निराधार आरोप लगाकर बंद कर दिया

१४ जुलाई, २०२४

धर्मशाला। चीनी सरकार ने १२ जुलाई २०२४ को गोलॉग में पुरस्कार से सम्मानित 'जिग्मे ग्यालत्सेन नेशनलिटीज वोकेशनल हाईस्कूल' को जबरन बंद करने का आदेश दिया है। विश्वसनीय सूत्रों ने बताया है कि किंघई की चीनी प्रांतीय सरकार ने स्कूल बंद करने के सही कारणों को छुपाया है। प्रांतीय सरकार की ओर से यह कहा गया है कि स्कूल में तलाशी और पूछताछ यह सुनिश्चित करने के लिए की गई थी कि कोई १८ वर्ष से कम उम्र का भिक्षु या भिक्षुणी तो स्कूल में नहीं थीं। सरकारी अधिकारियों ने धमकी भी दी कि यदि वे पाए गए तो कड़ी सजा दी जाएगी।

हाल के वर्षों में संस्कृति और धर्म सहित तिब्बती भाषा और पहचान के संरक्षण को समाप्त करने के लिए अनेक तिब्बती निजी स्कूलों को इसी तरह से बंद कर दिया गया है। 'स्नो लैंड एकेडमी ऑफ साइंसेज' द्वारा संचालित तिब्बती वोकेशनल हाईस्कूल का बंद होना इसी कड़ी में अगला कदम है। गोलॉग क्षेत्र के कम्युनिस्ट पार्टी के सचिव और अन्य अधिकारियों ने इस स्कूल पर कई वर्षों में अनेक मुकदमे दर्ज करा रखे थे। वे इस तरह के दबावों से कई वर्षों से इस स्कूल को बंद करने की साजिश रच रहे थे।

स्कूल बंद होने के इस दुखद समाचार से स्कूल के शिक्षकों और छात्रों में भारी निराशा छा गई और वे भावुकता में रोने लगे। कॉलेज के कई गेशेज़ (स्नातक) और अन्य भिक्षुओं ने कहा कि उन्हें रात में सोने की अनुमति नहीं दी गई थी। विद्यार्थी जहाँ भी यात्रा करते थे, आँसू बहाते थे।

शेरब नोरबू लिंग स्कूल के छात्रों के एक समूह पर भी तिब्बती राष्ट्रीय ध्वज पर चित्रित आभूषण और शेर के प्रतीक का अपने समूह के लोगो के रूप में उपयोग करने के आरोप में मुकदमा दायर किया गया है। इस समूह पर चीनी सरकार ने प्रतिबंध लगा दिया है। यह समूह तिब्बती भाषा के संरक्षण के लिए समर्पित है।

स्कूल के संस्थापक जिग्मे ग्यालत्सेन पर स्नो लैंड पास्टरल एसोसिएशन और किंघई-तिब्बत ट्रेड एसोसिएशन के अध्यक्ष होने की आड़ में रिश्वत लेने का गलत आरोप लगाया गया है। २८ जून को एक लेख में उन पर आरोपों का दोषी बताया गया था। उन्हें तिब्बती राष्ट्रीयता परिषद के सदस्य के पद से भी निलंबित कर दिया गया था। शुरुआत में स्कूल के ख़िलाफ़ आरोपों की सुनवाई की गई और जिग्मे ग्यालत्सेन को किसी भी अपराध का दोषी नहीं पाया गया।

गैंगजोंग शेरब नोरबू लिंग का समापन समारोह

०८ जुलाई २०२४ को गैंगजोंग शेरब नोरबू लिंग का समापन समारोह एक भव्य स्नातक समारोह के साथ आयोजित किया गया था। पढ़ाई के दौरान दिमाग और संस्कृतियों में पूरी तरह से प्रशिक्षित ११० तिब्बती छात्रों ने प्रोफेसर ज़ोपा सांग्पो और प्रोफेसर काल्डेन ग्यात्सो के नेतृत्व में विभिन्न कॉलेजों से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। कॉलेज के तीन लामा, कॉलेज के संस्थापक गेशे जिग्मे ग्यालत्सेन, महान आध्यात्मिक शिक्षक गेशे चेन्मो दोरजे सुल्ट्रिम और महान विद्वान प्रोफेसर डोंग योंटेन ग्यात्सो ने इस वर्ष स्नातक समारोह की शोभा बढ़ाई। समारोह में कॉलेज का समस्त स्टाफ एवं विद्यार्थी भी शामिल हुए। स्नातक छात्रों को स्नातक का प्रमाण-पत्र और दोनों वर्गों के कर्मचारियों और पत्रकारों को उपहार प्रदान किए गए। तीनों शिक्षकों ने अपने दीक्षांत भाषण में छात्रों को ज्ञान के अनगिनत मोती दिए जिन्हें उन्हें जीवन भर याद रखना चाहिए।

स्कूल के संस्थापक राग्या जिग्मे ग्यालत्सेन द्वारा १४ जुलाई २०२४ को एक ऑनलाइन पोस्ट में स्नातक होने वाले छात्रों को निम्नलिखित भावनात्मक संदेश दिया गया :-

'जिग्मे ग्यालत्सेन नेशनलिटीज़ वोकेशनल स्कूल ऑफ़ गोलोग के विद्यार्थी, भले ही आप केवल तीस वर्ष के हों, आप अभी भी युवा और स्वस्थ हैं। इसमें कोई अफ़सोस की बात नहीं है। लेकिन जो अनित्य है वह कभी स्थायी नहीं होता। यह अनित्यता का अपरिहार्य नियम है कि चीजें पल-पल बदलती रहती हैं। हम पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं और इसीलिए जन्म- जन्मांतर तक शिक्षा प्राप्त करते रहना सबसे महत्वपूर्ण चीज है। हम अगले जन्मों में शिक्षा के लिए प्रार्थना क्यों न करें? यदि मृत व्यक्ति को पुनर्जीवित नहीं किया जा सकता तो इस पर विलाप करने से क्या लाभ? इसलिए, भावी जन्मों में उत्तम शरीर के लिए प्रार्थना करना सर्वोत्तम है। कृपया दुखी न हों, बल्कि अपने भविष्य की जिम्मेदारी लें।'

स्कूल का संक्षिप्त इतिहास

इस स्कूल की स्थापना १९९४ में महान शिक्षक राग्या जिग्मे ग्यालत्सेन ने माचेन काउंटी पीपुल्स गवर्नमेंट और गोलॉग पीपुल्स गवर्नमेंट की पूर्ण स्वीकृति और समर्थन से की थी। शुरू में इसमें ८६ छात्र थे, जो मुख्य रूप से किंघई के अंदर से थे। २०२१ में तिब्बत और तिब्बती क्षेत्रों से १००० से अधिक छात्रों को मुख्य रूप से किंघई, सिचुआन, गांसु, इनर मंगोलिया और पूर्वी तुर्केस्तान के चीनी प्रांतों में ले जाया गया। कॉलेज में शिक्षक और कर्मचारी हैं, जिनमें प्रिंसिपल राग्या जिग्मे ग्यालत्सेन और प्रिंसिपल के सहायक शामिल हैं। इनमें प्रिंसिपल के सहायक प्रोफेसर डम्पा सुल्लिम ग्यात्सो, प्रोफेसर चेनमो शेरब टेंडर और प्रोफेसर डोंग योंटेन ग्यात्सो शामिल हैं। छात्रों की कुल संख्या लगभग १४०० है। कॉलेज व्यावसायिक है, जिसमें विशेष कक्षाएं हैं:- तिब्बती भाषा, अंग्रेजी भाषा, कंप्यूटर विज्ञान, इंजीनियरिंग, चिकित्सा, वीडियो और शारीरिक शिक्षा। १९९४ से अब तक कम से कम २२५९ स्नातक छात्रों ने अपनी पढ़ाई पूरी की है। इनमें विश्वविद्यालय स्तर के कम से कम ७४२ छात्र, कम से कम ४० शोध छात्र, कम से कम तीन डॉक्टरेट छात्र, कम से कम १०२ सरकारी अधिकारी, कम से कम २४२ शिक्षक, जिनमें १३ विश्वविद्यालय शिक्षक और व्याख्याता शामिल हैं, कम से कम १०८ मठवासी प्रशासक और कम से कम २५२ व्यवसायी हैं।

स्कूल की संक्षिप्त उपलब्धियां

३० वर्षों में स्नातक छात्रों की ३०० से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं और छात्रों ने साहित्य, कला, व्याकरण, लोकगीत, वेशभूषा और पहाड़ और नदी संस्कृतियों पर लेख लिखे हैं, जो सांस्कृतिक शिक्षा के विकास में योगदान करते हैं। अनेक स्नातक छात्र गायक, नृत्य, एथलीट, फिल्म अभिनेता, फिल्म निर्देशक, टीवी निर्माता और रेडियो निर्माता के रूप में अपना करियर बनाया है। समाज में लौटने के बाद उन्होंने शाखा विद्यालय स्थापित किए, मठों की स्थापना की और पर्यावरण संघों का निर्माण किया। संस्थान ने नई अनुवाद प्रणाली और शैक्षिक सामग्री विकसित करने, फार्मास्यूटिकल्स और सौंदर्य प्रसाधन विकसित करने, इको-उर्वरक विकसित करने, स्थानीय खाद्य उत्पाद विकसित करने और तिब्बती कपड़े बनाने के लिए साझेदारी स्थापित की है। संस्थान ने बड़े पैमाने पर लोगों और देश के विकास में योगदान दिया है। छोटे पैमाने पर इसने लोगों को अपने ज्ञान के माध्यम से आत्मनिर्भर बनने और अपने माता-पिता और राज्य पर कम बोझ डालने का काम किया है। माचेन काउंटी पीपुल्स सरकार और माचेन काउंटी शिक्षा कार्यालय, गोलॉग काउंटी पीपुल्स सरकार और गोलॉग काउंटी शिक्षा कार्यालय, किंघई प्रांत पीपुल्स सरकार और किंघई प्रांत शिक्षा कार्यालय ने बार-बार माचेन काउंटी पीपुल्स सरकार और गोलॉग काउंटी पीपुल्स सरकार को अकादमिक उत्कृष्टता की परीक्षा में प्रथम स्थान देकर सम्मानित किया है।

विश्वविद्यालय को जनता और धार्मिक प्राधिकारों द्वारा भी बहुत सम्मान दिया जाता है। जनता द्वारा शिक्षाविदों को चुने जाने और उनका मूल्यांकन किए जाने के बाद विश्वविद्यालय को पहली बार 'शैक्षणिक आशा के लिए स्वर्ण पदक' प्रदान किया गया था। हर साल, प्रांतों के अंदर और बाहर के विभिन्न स्कूलों के शिक्षक और शैक्षणिक अधिकारी विश्वविद्यालय की शिक्षा के तरीकों और दिशा का अध्ययन करने आते हैं। बीजिंग विश्वविद्यालय, झोंगशान विश्वविद्यालय, हाफो विश्वविद्यालय और बैकालॉरिएट ऑस्ट्रेलिया के शोधकर्ता, प्रोफेसर और डॉक्टरेट छात्र विश्वविद्यालय की शिक्षा के तरीकों और दिशा का अध्ययन और जांच करने आते हैं। नेशनल पीपुल्स पॉलिटिकल कंसल्टेटिव कॉन्फ्रेंस (एनपीसीसीसी) ने छात्रों को शिक्षित करने की प्रक्रिया पर प्रभाव डालने के एवज में स्कूल के संस्थापक जिग्मे ग्यालत्सेन को 'झोंगहुआ चैरिटी वर्कर' की उपाधि से सम्मानित किया। राज्य परिषद के विशेष अनुसंधान कार्यालय के तहत शिक्षा शोधकर्ता और शिक्षा विशेषज्ञ यांग डोंगफेन और शिक्षा विशेषज्ञ ली किनक्सू ने अध्ययन करने और एक पेपर लिखने के लिए स्कूल का दौरा किया। उन्होंने 'मध्य मैदानी क्षेत्र में सबसे उत्कृष्ट स्कूल' के रूप में इस स्कूल की प्रशंसा की और कहा कि स्कूल का शिक्षा मॉडल बहुत शोध मूल्यपरक है। हाल ही में, विश्वविद्यालय को देश भर के

'दस अभिनव सामुदायिक स्कूलों' में से एक के तौर पर चुना और सम्मानित किया गया है। संक्षेप में, विश्वविद्यालय की प्रभावशीलता और उपलब्धियों को मीडिया द्वारा कई बार कवर किया गया है। इसमें किंघई टीवी, झांगजियाकौ टीवी, फ़ुज़ियान टीवी और सेंट्रल टेलीविज़न शामिल हैं। विश्वविद्यालय की ख्याति टेलीविजन और रेडियो के माध्यम से दुनिया भर में फैल गई है, और इसका प्रभाव देश भर में फैल रहा है।

◆ १४. अरुणाचल प्रदेश के तिब्बत समर्थक समूह के अध्यक्ष और सदस्यों ने तेनजिंगांग तिब्बती सेटलमेंट कार्यालय का दौरा किया

२५ जुलाई, २०२४

तेनजिंगांग। २४ जुलाई २०२४ को 'कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया' के राष्ट्रीय संयोजक और भारत के पूर्व सांसद श्री आर.के. खिरमे, अरुणाचल प्रदेश के तिब्बत समर्थक समूह (टीएसजीएपी) के अध्यक्ष श्री तारह तारक और महासचिव श्री नीमा सेंगये ने टीएसजीएपी सदस्यों और ज़ेडपीएम शेरगांव के शेरिंग वांग्मो के साथ तेनजिंगांग तिब्बती सेटलमेंट कार्यालय का दौरा किया और एक बैठक के दौरान तिब्बती सेटलमेंट अधिकारी राप्टेन शेरिंग के साथ बातचीत की।

श्री आर. के. खिरमे ने कई महत्वपूर्ण विषयों पर अपने अगाध अनुभवों से बैठक को लाभान्वित किया और तिब्बत और तिब्बती मुद्दे के बारे में अपने स्थानीय लोगों के बीच और अधिक जागरुकता पैदा करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा, 'तिब्बती लोग परम पावन दलाई लामा के कारण विश्व स्तर पर जाने जाते हैं और लंबे समय से चले आ रहे चीन-तिब्बती संघर्ष को चीन और परम पावन दलाई लामा या उनके प्रतिनिधियों या केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के नेतृत्व के बीच बिना किसी पूर्व शर्त के बातचीत के जरिए सुलझाया जाना चाहिए।'

अरुणाचल प्रदेश के तिब्बत समर्थक समूह (टीएसजीएपी) के अध्यक्ष श्री तारह तारक ने सक्रिय टीम सदस्यों के साथ अपने नेतृत्व में अरुणाचल प्रदेश में तिब्बती मुद्दे के लिए काम करने की अपनी प्रतिबद्धता का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा, 'हमने तिब्बती सेटलमेंट अधिकारियों के साथ समन्वय में टीएसजीएपी की भविष्य की कार्य योजना के बारे में चर्चा की। तिब्बती लोगों को मानवीय सहायता देने के लिए टीएसजीएपी अरुणाचल प्रदेश सरकार के संपर्क में रहेगा।'

सभी टीएसजीएपी सदस्यों ने भगवान बुद्ध का आशीर्वाद लेने के लिए तेनजिंगंग स्थित ग्युटो मठ का दौरा किया और बाद में तिब्बती शिविर के नेताओं द्वारा उनके सम्मान में दोपहर के भोजन का आयोजन किया गया।

◆ १५. तिब्बत ने पेरिस ओलंपिक खेलों के उद्घाटन समारोह में भाग लिया

२७ जुलाई, २०२४

पेरिस। फ्रांस में तिब्बती प्रतिनिधि रिग्जिन जेनखांग के नेतृत्व में एक तिब्बती प्रतिनिधिमंडल ने 'सिटी ऑफ लाइट' के बीचोंबीच से गुजरती साइन नदी के तट पर अवस्थित पेरिस शहर में आयोजित ओलंपिक खेलों के उद्घाटन समारोह में आमंत्रित अतिथि के रूप में हिस्सा लिया। इस प्रतिनिधिमंडल में समन्वयक थुप्टेन शेरिंग, तिब्बती समुदाय के अध्यक्ष पेमा रिनचेन और पूर्व राष्ट्रपति भिक्षु तेनजिन पेन्पा शामिल थे।

तिब्बत का ओलंपिक में प्रतिनिधित्व नहीं होने के बावजूद, इस प्रतिनिधिमंडल की उपस्थिति तिब्बत का प्रतिनिधित्व करने और चल रही तिब्बती स्थिति के बारे में जागरुकता बढ़ाने और अभियान चलाने के लिए महत्वपूर्ण थी।

यहाँ यह ध्यान दिया जा सकता है कि फ्रांस, यूरोप में तिब्बत समर्थक समूहों की सबसे बड़ी संख्या के साथ, यूरोप में सबसे बड़ी संख्या में तिब्बती निर्वासितों का आश्रय स्थल भी है।

अपने राष्ट्रीय ध्वज को गर्व से प्रदर्शित करते हुए तिब्बती प्रतिनिधिमंडल ओलंपिक भावना का जश्न मनाते हुए इस ऐतिहासिक क्षण में फ्रांसीसी लोगों के साथ शामिल हुआ। इससे वहां उपस्थित लोगों में इसके प्रति बहुत जल्दी बहुत रुचि उत्पन्न हुई और वहां पर अनेक प्रश्न भी खड़े हुए।

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Tashi Dekyi
Acting Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अभार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षों से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीछे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

ताशी देकि
कार्यवाहक समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पताः भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
फोनः 011–29830578
ई–मेलः coordinator@indiatibet.net

शिक्षा मंत्री थरलम डोल्मा चांगरा ने सीबीएसई सचिव से मुलाकात की

कालोन थरलम डोल्मा चांगरा ने जापानी विश्वविद्यालयों के छात्रों को संबोधित किया

अरुणाचल प्रदेश के तिब्बत समर्थक समूह के अध्यक्ष और सदस्यों ने तेनजिंगांग तिब्बती सेटलमेंट कार्यालय का दौरा किया

तिब्बत ने पेरिस ओलंपिक खेलों के उद्घाटन समारोह में भाग लिया